



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 26]

नई दिल्ली, शुक्रवार, जनवरी 28, 2005/माघ 8, 1926

No. 26]

NEW DELHI, FRIDAY, JANUARY 28, 2005/MAGHA 8, 1926

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

अन्तिम जांच परिणाम

नई दिल्ली, 27 जनवरी, 2005

**विषय : इंडोनेशिया, मलेशिया और यूएई से थर्मल सेन्सिटिव पेपर के आयातों के संबंध में
पाटनरोधी जांच—अंतिम जांच परिणाम**

सं. 14/2/2003-डीजीएडी.—वर्ष 1995 में यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 तथा सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आंकलन एवं संग्रहण और क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995, को ध्यान में रखते हुए:

क. प्रक्रिया:

2. जांच के संबंध में निम्नलिखित प्रक्रिया का पालन किया गया है:-

i) निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिन्हें इसके बाद प्राधिकारी कहा गया है) को उपरोक्त नियमों के अन्तर्गत मै0 श्री कृष्ण पेपर मिल्स एंड इंडस्ट्रीज लिमिटेड, नई दिल्ली से लिखित आवेदन प्राप्त हुआ है जिसमें इंडोनेशिया, मलेशिया और यूएई (जिन्हें इसके बाद संबद्ध देश कहा गया है) के मूल के अथवा वहां से निर्यातित थर्मल सेन्सिटिव पेपर (जिन्हें इसके बाद संबद्ध वस्तु कहा गया है) के पाटन का आरोप लगाया गया है।

ii). प्रारम्भिक जांच में कुछ कमियां पाई गई जिन्हें आवेदक द्वारा दूर कर दिया गया था।

- iii). प्राधिकारी ने उक्त नियम-5 के उपनियम (5) के अनुसार जांच की कार्रवाई शुरू करने से पहले याचिकाकर्ता द्वारा दिये गये पाटन आवेदन की प्राप्ति के बारे में भारत में संबद्ध देशों के दूतावासों /उच्चायोग को सूचित किया गया ।
- iv). प्राधिकारी ने सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम की अनुसूची I के शीर्ष/उपशीर्ष 4809.10, 4811 और 4816 के अन्तर्गत वर्गीकृत थर्मल सेन्सिटिव पेपर के आयातों से संबंधित पाटनरोधी कार्रवाई शुरू करने के बारे में एक सार्वजनिक सूचना जारी की जिसे 29 जुलाई, 2003 को भारत के राजपत्र असाधारण में प्रकाशित किया गया था ।
- v). प्राधिकारी ने ज्ञात निर्यातकों तथा शिकायतकर्ताओं को उक्त सार्वजनिक सूचना की एक प्रति भेजी और उन्हें लिखित में अपने विचारों से भी अवगत कराने का मौका दिया ।
- vi). उपरोक्त नियम 6 के उपनियम (3) के अनुसार प्राधिकारी ने याचिका की एक प्रति सभी ज्ञात निर्यातकों और भारत में संबद्ध देशों के दूतावासों को भेजी;
1. एशिया पल्स एंड पेपर कं० लि०
पीटी पैब्रिक केरतास तिज्वी किमिया टीबीके एंड
पीटी इंदाह कियात पल्स एंड पेपर कार्पो. टीबीके
मार्फत पीटी पिंडो डेली पल्प एंड पेपर मिल्स
जल. प्रोफ. डा० आईआर.एच सोएटमी नं० 88
टुलेक जाम्बे कारावांग, जावा बारात,
इंडोनेशिया
 2. पीटी पिंडो डेली पल्प एंड पेपर मिल्स
जल. प्रोफ. डा० आईआर.एच सोएटमी नं० 88
टुलेक जाम्बे कारावांग, जावा बारात,
इंडोनेशिया
 3. ऐंड्रयूज एंड मिसेल एजेंसीज
ब्लाक 774, पासिर रिस स्ट्रीट 71
03-392, सिंगापुर-510774
 4. मेट्रोपोलिक पेपर इंडस्ट्रीज
पीओ बाक्स-27584
दुबई,
संयुक्त अरब अमीरात

5. यूनिवर्सल इंटरप्राइजेज (ओवरसीज) लि०
पीओ बाक्स सं० 5886
शारजाह
संयुक्त अरब अमीरात
- vii). केन्द्रीय उत्पाद शुल्क एवं सीमाशुल्क बोर्ड (सीबीईसी) और वाणिज्यिक आसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय (डीजीसीआईएंडएस) से यह अनुरोध किया गया था कि संबद्ध वस्तु के आयातों का विवरण उपलब्ध करायें ।
- viii). संबद्ध देशों के दूतावासों/उच्चायोग को भी नियम 6(2) के अनुसार इस अनुध के साथ जांच शुरूआत के बारे में सूचित किया गया था कि अपने देश के सभी संबंधित निर्यातकों/उत्पादकों को निर्धारित समय के भीतर प्रश्नावली का उत्तर भेजने की सलाह दें । निर्यातकों को भेजे गये पत्र, याचिका, और प्रश्नावली की एक प्रति भी उनको भेजी गई थी ।
- ix) नियम 6(4) के अनुसार भारत में संबद्ध वस्तु के निम्नलिखित ज्ञात आयातकों को सूचना प्राप्त करने हेतु प्रश्नावली भेजी गई थी;

सिंडीकेट प्रिन्टर्स
बी-4, सेक्टर III
नोएडा-201301

गोपसन पेपर्स लि०
ए-28, सेक्टर-9
नोएडा (उ० प्र०)
लकी फार्म्स (प्र०) लि०
16, सम्राट कम्पाउंड
एल बी एस मार्ग
विखरोली (वेस्ट)
मुम्बई-400079

राशनल बिजनेस कार्पोरेशन
सेन्चुरी हाउस

नजदीक सत्यवती कालेज
अशोक विहार
दिल्ली-110052

विजेक्स आफिस इक्विपमेंट (प्रा०) लि०
कमल आर्केड
अन्ना सलाई
माउन्ट रोड
चेन्नई-600006

एक्सेल मार्क ट्रेडिंग कं०
22 (ओल्ड नं० 43)
सुब्बरयानी स्ट्रीट
नम्मल वार्पेट
चेन्नई

संजय इन्टरनेशनल
नं० 1, 80 फुटा रोड,
सत्या गार्डन, सालिग्रामम
चेन्नई-600093

कालरा पेपर्स (प्रा०) लि०
34, राजा गार्डन
नई दिल्ली-110015

सुमत परसाद एंड सन्स
355, चावड़ी बाजार
दिल्ली-110006

दिल्ली ट्रेडिंग हाउस
1/11423, मेन रोड
सुभाष पार्क
नवीन शाहदरा
दिल्ली-110032

कास्मो पेपर स्टोर्स

सी-4, धनराज इंडस्ट्रियल एस्टेट
लोवर परेल
मुम्बई-400013

हीरो पेपर कं0 (प्रा0)लि0
6/ए शाह नहर इंडस्ट्रियल एस्टेट
लोवर परेल
मुम्बई-400013

कुबेर इन्टरप्राइजेज
535, कटरा ईश्वर भवन
खारी बावली
दिल्ली-110006

- x) प्राधिकारी ने 21 मई, 2004 को एक सार्वजनिक सुनवाई की जिसमें हितबद्ध पक्षों को मौखिक रूप से अपने विचार प्रस्तुत करने का अवसर दिया गया । विचार प्रस्तुत करने वाली सभी पक्षों से, व्यक्त विचारों को लिखित रूप में दाखिल करने का अनुरोध किया गया था । पक्षों को यह भी सलहा दी गई थी कि विरोधी पक्षों द्वारा व्यक्त विचारों की प्रतियाँ ले लें और खंडन, यदि कोई है तो सूचित करें ।
- xi) प्राधिकारी ने नियम 6(7) के अनुसार सार्वजनिक फाइल के रूप में रखे गए अनेक हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य के अगोपनीय अंश उपलब्ध कराये और हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोध पर उनके निरीक्षण के लिए खुला रखा ।
- xii) उपरोक्त नियमों के नियम-16 के अनुसार इन जाँच परिणामों के लिए विचारित आवश्यक तथ्यों/आधार का खुलासा 23 दिसंबर, 2004 को ज्ञात हितबद्ध पार्टियों के समक्ष किया गया था और इन पर प्राप्त टिप्पणियों पर अन्तिम जांच परिणामों में विधिवत विचार किया गया है ।
- xiii) जांच शुरू करने के बाद हितबद्ध पक्षों द्वारा दिए तर्कों पर सार्वजनिक सुनवाई के बाद प्रकटन विवरण में उपयुक्त कार्रवाई की गई है । प्रकटन विवरण के साथ-साथ प्रकटन के उत्तर में दिए गए तर्कों पर इन जांच परिणामों में कार्रवाई की गयी है;
- xiv) प्राधिकारी ने मौके के सत्यापन (जो आवश्यक समझा गया था) सहित घरेलू उद्योग की लागत जाँच भी की और भारत में संबद्ध वस्तु की इष्टतम घरेलू

उद्योग की उत्पादन लागत तथा उसको बनाने और बेचने की लागत का आकलन सामान्यतः स्वीकृत लिखा सिद्धान्तों (जी.ए.ए.पी.) और घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत सूचना के आधार पर किया।

xv) प्राधिकारी ने मै0 पी.टी. डेली पल्स एंड पेपर मिल्स, इंडोनेशिया द्वारा प्रस्तुत सूचना का मौके पर सत्यापन किया।

xvi) *** यह चिह्न इस अधिसूचना में हितबद्ध पार्टी द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत की गई सूचना का द्योतक है और प्राधिकारी ने नियमानुसार उसे गोपनीय ही माना है।

xvii) जांच में 01 अप्रैल, 2002 से 31 मार्च, 2003 तक की अवधि (जाँचावधि) शामिल थी। क्षति विश्लेषण में पिछले तीन वर्ष 1999-2000, 2000-2001, 2001-2002 और जाँचावधि शामिल थी।

xviii) जांच शुरुआत संबंधी सूचना की प्रतियां एफ सी सी आई, सीआईआई, एसोचैम इत्यादि को व्यापक परिचालन के लिए भेजी गयी थी।

ख. याचिकाकर्ताओं, निर्यातकों, आयातकों और अन्य हितबद्ध पक्षों के विचार एवं प्राधिकारी द्वारा जांच

3. अनेक हितबद्ध पक्षों द्वारा व्यक्त विचारों पर प्रकटन विवरण में और इन जांच परिणामों में विचार-विमर्श किया गया है। प्रकटन विवरण में पहले जिन मतों पर विचार विमर्श नहीं किया गया है और जिन्हें प्रकटन विवरण के उत्तर में दिया गया है उन पर सम्भव सीमा तक एवं इस मामले पर जितना उनका प्रभाव है निम्नलिखित संबंधित पैराग्राफों में विचार-विमर्श किया गया है। हितबद्ध पक्षों द्वारा दिए गए तर्कों की जांच उन पर विचार और जहां कहीं उपयुक्त है निम्नलिखित संबंधित पैराग्राफों में उचित कार्रवाई की गयी है:

4. जांच शुरु करने के बाद निम्नलिखित से उत्तर प्राप्त हुए हैं-

निर्यातक:-

मै0 पीटी. पिंडो डेली पल्प एंड पेपर मिल्स, इंडोनेशिया

आयातक:

मै0 सुमत प्रसाद एंड संस, दिल्ली

5 विचाराधीन उत्पाद

विचाराधीन उत्पाद थर्मल सेन्सिटिव पेपर (टीएसपी) है। थर्मल सेन्सिटिव पेपर बेस पेपर को थर्मल सेन्सिटिव गुण प्रदान करने के लिए रसायन के विशेष मिश्रण वाला कोटेड पेपर है। पेपर पर छाप उक्त पेपर पर नियंत्रित थर्मल ताप द्वारा उत्पन्न की जाती है। थर्मल सेन्सिटिव पेपर का उपयोग मुख्यतः इलैक्ट्रॉनिक उपकरणों के लिए संदेश रिकॉर्ड करने हेतु किया जाता है जहाँ मशीन का उपयोग ताप किरणों की संवेदनशीलता के जरिये संदेशों, रिपोर्टों को रिकॉर्ड करने के लिए किया जाता है। थर्मल सेन्सिटिव पेपर का उपयोग मुख्यतः फैंक्स मशीनों में किया जाता है। इसका उपयोग ईसीजी मशीनों तथा अन्य चिकित्सा उपकरणों, भूकम्पलेखी मशीनों, एअरलाइन असबाब टैगिंग, टिकटों, बोर्डिंग कार्डों आदि में भी किया जाता है। याचिकाकर्ताओं ने दावा किया था कि टी एस पी सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के अध्याय 48 के अन्तर्गत वर्गीकृत है। इस उत्पाद का कोई विशिष्ट सीमा-शुल्क नहीं है। तथापि, इसे सामान्यतः उप-शीर्ष 4809.10 अर्थात् 'कार्बन अथवा इसी प्रकार का कापीइंग पेपर' में शामिल किया जाता है। याचिकाकर्ताओं ने यह भी दावा किया था कि टीएसपी की निकासी सीमाशुल्क टैरिफ वर्गीकरण के शीर्ष और 4816 के विभिन्न उपशीर्षों के अन्तर्गत भी की जाती है। ये वर्गीकरण केवल सांकेतिक हैं और वर्तमान जांच के क्षेत्र पर किसी भी रूप में बाध्यकारी नहीं है। निर्यातक मै0 पिंडो डेली ने यह तर्क दिया था कि याचिकाकर्ता ने वर्ष 2002-03 के दौरान विचाराधीन उत्पाद के 2000 मी.टन के एक बाजार का उल्लेख किया था जबकि उनके अनुसार उक्त बाजार लगभग 9000-1000 मी.टन का था और यह कि उत्पाद की स्थानीय बाजार की अधिकांश जरूरत का उत्पादन याचिकाकर्ता द्वारा नहीं किया जा सकता और निर्दिष्ट प्राधिकारी विचाराधीन उत्पाद की परिभाषा की गहन जांच करें। प्राधिकारी ने इन तर्कों पर विचार किया है और यह पाया है कि टी एस पी की मांग टीएसपी के हुए आयातों और घरेलू बिक्रियों पर आधारित होने चाहिए। उपलब्ध आयात संबंधी आंकड़ों और भारत में उत्पादकों की घरेलू बिक्रियों के आधार पर प्राधिकारी ने जांच अवधि के दौरान मांग लगभग 1838 मी.टन निर्धारित की है। प्राधिकारी का मानना है कि उत्पाद के क्षेत्र को थर्मल सेन्सिटिव पेपर के रूप में सही ढंग से वर्णित किया गया है।

6. समान वस्तु

याचिकाकर्ता ने दावा किया था कि उनके द्वारा विनिर्मित उत्पाद और आयातित उत्पाद में कोई अन्तर नहीं है। उन्होंने यह भी कहा था कि याचिकाकर्ता द्वारा भारत में विनिर्मित सम्बद्ध उत्पाद वाणिज्यिक एवं तकनीकी रूप से आयातित उत्पाद से प्रतिस्थापनीय है। इस दावे के विरोध में कोई तर्क नहीं दिया गया है। प्राधिकारी ने पाया है कि घरेलू उद्योग थर्मल सेंसिटिव पेपर का उत्पादन करता है। निर्यातक एवं आयातक से प्राप्त सूचना के आधार पर प्राधिकारी का विचार है कि घरेलू उद्योग द्वारा निर्मित किया जा रहा उत्पाद विचाराधीन उत्पाद का वाणिज्यिक विकल्प है और भौतिक एवं रासायनिक गुणों, कार्य और प्रयोग, आबंटन और विपणन तथा टैरिफ वर्गीकरण जैसे गुणों के अनुसार तुलनीय है। इसलिए प्राधिकारी मानते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा विनिर्मित उत्पाद सम्बद्ध देशों से आयातित सम्बद्ध वस्तु के समान वस्तु है।

7. घरेलू उद्योग:

मै0 श्री कृष्णा पेपर मिल्स एंड इंडस्ट्रीज लि0, नई दिल्ली में पाटनरोधी जांच के लिए वर्तमान आवेदन दायर किया था। आवेदन करते समय याचिकाकर्ता ने दावा किया था कि वह भारत में संबद्ध वस्तु का एकमात्र उत्पादक है और इसलिए वह उपरोक्त नियमावली के नियम 5(3)(क) के अनुसार घरेलू उद्योग की ओर से याचिका दायर करने की स्थिति के मानदण्ड को पूरा करता है। 21.5.2004 को सार्वजनिक सुनवाई के पश्चात् इंडोनेशिया के निर्यातक मै0 पिंडो डेली और आयातक मै0 सुमत प्रसाद एंड संस द्वारा यह मुद्दा उठाया गया था कि मै0 श्री कृष्णा पेपर मिल्स एंड इंडस्ट्री लि0 एकमात्र उत्पादक नहीं है और यह कि एक और घरेलू उत्पादक है जो थर्मल सेंसेटिव पेपर का उत्पादन करता है। मै0 पीटी पिंडो डेली पल्स एंड पेपर मिल्स (सिनार मास समूह) इंडोनेशिया ने तर्क दिया है कि 1.1.2003 को आवेदन दाखिल करते समय घरेलू उत्पादक मै0 श्री कृष्णा पेपर मिल्स एंड इंडस्ट्रीज लि0 ने यह गलत वक्तव्य दिया था कि वह थर्मल सेंसेटिव पेपर का एकमात्र भारतीय उत्पादक है। सार्वजनिक सुनवाई के पश्चात् उलब्ध कराई गई सूचना और याचिकाकर्ता के वक्तव्य के अनुसार वर्ष 2002-03 के दौरान थर्मल सेंसेटिव पेपर का उत्पादन करने वाला अन्य उत्पादक मै0 अल्फा कार्बनलेस पेपर है। निर्यातक ने तर्क दिया है कि निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा गलत सूचना के आधार पर जांच प्रारंभ करना करार के अनुच्छेद 5.4 का उल्लंघन है। इसके अतिरिक्त निर्यातक द्वारा आरोप लगाया गया है कि अनुच्छेद 5.2 की अपेक्षाओं को पूरा नहीं किया गया था क्योंकि याचिकाकर्ता इस दावे को प्रमाणित करने के लिए साक्ष्य प्रस्तुत

करने में असफल रहा कि समान उत्पाद का उत्पादन करने वाले घरेलू उद्योग को करार में की गई व्याख्या के अनुसार क्षति हुई थी । इसके अतिरिक्त, यह आरोप लगाया गया है कि निर्दिष्ट प्राधिकारी यह निर्धारित करने के लिए कि क्या जांच प्रारंभ करने को उचित ठहराने के लिए पर्याप्त साक्ष्य हैं, अनुच्छेद 5.2 के अनुसार आवेदन में दिए गए साक्ष्य की यथार्थता तथा पर्याप्तता की जांच करने के दायित्व को पूरा करने में असफल रहे । निर्यातक ने यह भी तर्क दिया है कि घरेलू उद्योग में मै0 अल्फा कार्बनलेस पेपर को भी शामिल किया जाना चाहिए ।

निर्यातक ने यह भी तर्क दिया है कि इस जांच की शुरुआत पाटनरोधी करार का उल्लंघन होने के कारण इसे तत्काल समाप्त कर दिया जाना चाहिए । इसके अतिरिक्त यह कहा गया है कि उक्त उल्लंघनों को किसी कार्योत्तर निष्कर्ष द्वारा उचित सिद्ध नहीं किया गया है ।

प्राधिकारी ने इन तर्कों की जांच की है और पाया है कि थर्मल सेंसेटिव पेपर के आयातों से संबंधित यह तीसरी पाटनरोधी जांच है । पिछली जांचों में मै0 श्री कृष्णा पेपर मिल्स एंड इंडस्ट्रीज लि0 ने एकमात्र उत्पादक के रूप में घरेलू उद्योग का प्रतिनिधित्व किया था । घरेलू उद्योग ने वर्तमान जांच में यह वक्तव्य दिया था कि वे देश में थर्मल सेंसेटिव पेपर के एकमात्र उत्पादक हैं । इस जांच का आवेदन 1 जनवरी 2003 को प्राप्त किया गया था जबकि मै0 अल्फा कार्बनलेस पेपर, अन्य उत्पादक ने वर्ष 2002-03 के दौरान 345.05 मी.टन थर्मल सेंसेटिव पेपर के उत्पादन की सूचना दी थी । अतः निर्यातक का यह आरोप कि याचिकाकर्ता मै0 श्री कृष्णा ने आवेदन दाखिल करते समय गलत वक्तव्य दिया था, सही नहीं है क्योंकि वित्त वर्ष 2002-03, 31 मार्च, 2003 को समाप्त होता है । याचिकाकर्ता ने सार्वजनिक सुनवाई के पश्चात् दस्तावेज भी प्रस्तुत किए कि मै0 अल्फा कार्बनलेस पेपर, मुम्बई अनेक स्रोतों (याचिकाकर्ता सहित) से ताप संवदी कागज के बड़े रोल खरीद रहा है तथा बाजार में तैयार रोलों की आपूर्ति कर रहा है । वर्ष 2002-03 के लिए कंपनी (मै0 अल्फा) की वार्षिक रिपोर्ट को 5 जून, 2003 के दौरान ताप संवदी कागज के उनके उत्पादन से संबंधित सूचना निहित है । प्राधिकारी नोट करते हैं कि अनुच्छेद 5.2 के तहत सूचना की प्रस्तुति संबंधी याचिकाकर्ता की आपत्ति, जहाँ तक सूचना का संबंध है, आवेदक के पास पर्याप्ततः उपलब्ध है । अनुच्छेद 5.2 (i) में यह भी उल्लेख है कि जहां घरेलू उद्योग की ओर से लिखित में आवेदन किया जाता है वहाँ उस आवेदन में उस आवेदन में उस उद्योग को अभिज्ञात किया जाएगा जिसकी ओर से उक्त आवेदन किया गया है जिसके साथ समस्त उत्पादक के सभी ज्ञात घरेलू उत्पादकों की एक सूची तथा यथासंभव सीमा तक ऐसे

उत्पादकों द्वारा उत्पादित समान उत्पाद के घरेलू उत्पादन की मात्रा और मूल्य का विवरण संलग्न होगा। मै0 अल्फा कार्बनलैस पेपर एक प्राइवेट लिमिटेड कंपनी है तथा उनकी वार्षिक रिपोर्ट सामान्यतः सार्वजनिक नहीं होती। इन परिस्थितियों में याचिकाकर्ता 1.1.2003 को आवेदन प्रस्तुत करते समय 2002-03 के दौरान मै0 अल्फा कार्बनलैस पेपर के उत्पादन के बारे में पर्याप्ततः सूचना की प्रत्याशा नहीं कर सका। प्राधिकारी ने आवेदन में दिए गए साक्ष्यों की परिशुद्धता तथा पर्याप्तता, जो कि उस समय तर्कसंगत रूप से उपलब्ध थी, की जांच की थी। प्राधिकारी के विचार में करार के अनुच्छेद 5.2 तथा 5.3 का उल्लंघन नहीं हुआ था। प्राधिकारी ने इस संबंध में निर्यातक की दलीलों को पुष्टिकारक नहीं पाया तथा जांच को समाप्त करने की मांग को तर्कसंगत नहीं पाया। मै0 अल्फा कार्बनलैस को उनके उत्पादन के आंकड़ों की सूचना देने तथा इस जांच में सहभागिता हेतु उनकी इच्छा व्यक्त करने की सलाह दी गई थी। कंपनी ने सूचित किया था कि वे वस्तुतः कार्बनलैस पेपर का उत्पादन करते हैं। तथापि, उन्होंने ताप संवेदी कागज का उत्पादन शुरू कर दिया था क्योंकि उन्हें कार्बनलैस पेपर के आयात से कड़ी प्रतिस्पर्धा करनी पड़ रही थी। उन्होंने ताप संवेदी कागज के अपने उत्पादन के 2002-03 के दौरान 345.05 मी.टन तथा वर्ष 2000-01 तथा 2001-02 के दौरान शून्य उत्पादन की पुष्टि की थी। तथापि वे इस जांच में सहभागिता नहीं करना चाह रहे थे क्योंकि उनका उत्पादन अत्यधिक कम था। तथापि, उन्होंने उल्लेख किया है कि वे अपनी लागत वसूलने में तथा ताप संवेदी कागज के उत्पादन तथा बिक्री से लाभ कमाने में समर्थ नहीं हैं। प्राधिकारी ने यह पाया मै0 श्री कृष्णा नियम 5(3) के अनुसार याचिका दायर करने की योग्यता रखते हैं। वे नियम 2(ख) के अर्थ के भीतर घरेलू उद्योग हैं क्योंकि उनके उत्पादन में ताप संवेदी कागज का बड़ा हिस्सा है। वर्ष 2002-03 में घरेलू उत्पादन की स्थिति निम्नानुसार थी:-

मै0 श्री कृष्णा पेपर मिल्स	-995 मी.टन
मै0 अल्फा कार्बनलैस पेपर	-345 मी.टन
योग	-1340 मी.टन

मै0 श्री कृष्णा के शेयर - 74%

उपर्युक्त पर विचार करते हुए प्राधिकारी का यह विचार है कि इस जांच की शुरुआत में करार के खण्ड 5.4 का कोई उल्लंघन नहीं हुआ है। प्राधिकारी मानते हैं कि मै0 श्री कृष्णा पेपर मिल्स तथा इंडस्ट्रील लि0, जो संबद्ध उत्पाद के घरेलू उत्पादन का बड़ा हिस्सा बनाते हैं, उपर्युक्त नियम 2 (ख) के अर्थ के भीतर "घरेलू उद्योग" का प्रतिनिधित्व करते हैं।

8. अपर्याप्त अगोपनीय सूचना:

घरेलू उद्योग द्वारा यह तर्क दिया गया है कि निर्यातक ने गोपनीय प्रावधानों का अत्यधिक उपयोग किया है। निर्यातक द्वारा विभिन्न परिशिष्टों, जो उत्तर का हिस्सा हैं के संबंध में कोई सूचीबद्ध सूचना उपलब्ध नहीं कराई गई है। नियम 7 के तहत प्राधिकारी को सामग्री की गोपनीयता के संबंध में संतुष्ट होना पड़ता है। यहां तक कि सामग्री के गोपनीय होने पर भी गोपनीय आधार पर सूचना देने वाले पक्षकार को तत्संबंधी अगोपनीय सारांश प्रस्तुत करना होता है। प्राधिकारी ने जांच के दौरान घरेलू उद्योग की दलीलों को नोट किया है निर्यातक ने प्रश्नावली के उत्तरों के अगोपनीय रूपान्तर प्रस्तुत किए हैं। उन्होंने अगोपनीय आधार पर 19 मार्च, 2004, 15 जुलाई 2004, 28 सितम्बर, 2004 8 नवम्बर, 2004 तथा 4 जनवरी, 2005 को और सूचना उपलब्ध कराई थी। घरेलू उद्योग ने समय-समय पर सार्वजनिक फाइल का निरीक्षण किया तथा उसे अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोधों की प्रतियाँ लेने की अनुमति दी गई थी। निर्यातक के वित्तीय विवरण (वार्षिक रिपोर्ट) घरेलू उद्योग को उपलब्ध कराए गए थे। निर्यातक ने फैक्टरी लागत तथा विनिर्माण लागत, अंतर्देशीय भाड़े के आधार पर समायोजन, पैकिंग लागत, कच्चे माल का ब्यौरा, अन्य देशों को निर्यातों के ब्यौरों को प्रस्तुत न करने की वजह इज्यादि का सारांश उपलब्ध कराया था। भारत को वास्तविक निर्यात संबंधी सूचना, उत्पादन की विस्तृत लागत को गोपनीय प्रकृति का माना गया था। प्राधिकारी ने यह पाया कि निर्यातक ने गोपनीय आधार पर दी गई सूचना/दलीलों के पर्याप्त अगोपनीय सारांश उपलब्ध कराए तथा ये घरेलू उद्योग के समय-समय पर उनकी टिप्पणियाँ प्राप्त करने के लिए घरेलू उद्योग को उपलब्ध कराया गया था। प्राधिकारी नियम 7 के अनुसार इस आधार पर घरेलू उद्योग की दलील को पुष्टिकारक नहीं मानते।

ग. सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत तथा पाटन मार्जिन के संबंध में दावों की जांच

9. इंडोनेशिया के लिए सामान्य मूल्य:

(क) जांच प्रारंभ संबंधी नोटिस की प्रति संबद्ध देशों के दूतावासों/उच्चायोगों, निर्यातकों, आयातकों तथा घरेलू उद्योग को दी गई थी। जांच शुरूआत संबंधी अधिसूचना के उत्तर में मै0 पी.टी. पिंडोडेली पल्म एंड पेपर मिल्स इंडोनेशिया (पिंडो डेली) ने निर्यातक प्रश्नावली का उत्तर प्रस्तुत किया था। प्राधिकारी ने पिंडोडेली द्वारा प्रस्तुत सूचना का इंडोनेशिया स्थित उनके संयंत्र और कार्यालय

में जाकर सत्यापन किया था । इंडोडेली द्वारा उनके निर्यातों, घरेलू बिक्रियों, उत्पादन लागत आदि के संबंध में प्रस्तुत सूचना का सत्यापन किया गया था । सत्यापन रिपोर्ट की प्रति मै0 पिंडोडेली को भेजी गई थी । सत्यापन रिपोर्ट तथा प्रकटन विवरण के उत्तर में प्राप्त टिप्पणियों पर विचार किया गया है और उन पर इन जांच परिणामों में कार्रवाई की गई है ।

(ख) प्रकटन विवरण के उत्तर में घरेलू उद्योग ने निम्नलिखित तर्क दिए हैं-

- (i) इंडोनेशियाई निर्यातक के लिए निर्धारित पाटन मार्जिन घरेलू उद्योग को पर्याप्त राहत प्रदान करने के लिए अत्यधिक अपर्याप्त है ।
- (ii) निर्यातक की उत्पादन लागत का निर्धारण निर्दिष्ट प्राधिकारी ने सही ढंग से नहीं किया है । निर्यात की कुल उत्पादन लागत पर ब्याज एवं मूल्य ह्रास लागत को शामिल किए बिना विचार नहीं किया जा सकता । चूंकि निर्यातक ने जांच अवधि के लिए लाभ एवं हानि विवरण प्रस्तुत नहीं किया है । इसलिए उत्पादन लागत का निर्धारण निर्यातक द्वारा प्रस्तुत की गई सूचना के आधार पर नहीं किया जा सकता ।
- (iii) निर्यातक के पास बेस पेपर की अपनी खुद की कच्ची सामग्री है । यह स्पष्ट नहीं है कि क्या बेस पेपर की अंतरण कीमत सही और प्रतिनिधिक उचित बाजार मूल्य दर्शाया गया है । अंतरण कीमत दूरवर्ती आधार पर होने चाहिए ।
- (iv) निर्यातक को भारी वित्तीय घाटा हो रहा है । निर्यातक की खतरनाक वित्तीय स्थिति अंधाधुंध पाटन पद्धतियों के कारण बनी है ।
- (v) घरेलू बाजार में निर्यातक द्वारा बेची गयी थर्मल सेंसिटिव पेपर की कटी हुई शीटों की बिक्री लागत की तुलना कटाई लागतों के समायोजन के बाद भारत में निर्यातों के साथ की जानी चाहिए । निर्यातक ने केवल पेपर की चुनिंदा किस्मों के संबंध में सूचना उपलब्ध कराई है और सभी किस्मों के थर्मल पेपर के बारे में पूर्ण सूचना उपलब्ध नहीं कराई गई है ।
- (vi) निर्यातक ने अन्य देशों को संबद्ध वस्तु की बिक्री के बारे में सूचना नहीं दी है । निर्यातक ने भारत को निर्यातित संबद्ध उत्पाद और घरेलू बाजार तथा तीसरे देशों में बेचे गये उत्पादों के बीच लागत के अंतर की मात्रा नहीं बताई है । यह उन्हें असहयोगी घोषित करने के लिए पर्याप्त आधार होना चाहिए और नियम 6(8) लागू किया जाना चाहिए ।

- (vii) वित्तीय खर्चों पर कंपनी द्वारा रखे गये रिकॉर्डों के अनुसार विचार नहीं किया गया है । वित्तीय खर्चों की गणना करने के लिए मुद्रा संकट का संदर्भ अप्रासंगिक है ।
- (viii) एसजीए और लाभ का निर्धारण नियमानुसार संगत नहीं है । प्रशासनिक, बिक्री और सामान्य लागत की राशि तथा लाभ निर्यातक द्वारा समान उत्पाद के उत्पादन एवं व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में उसकी बिक्री से संबंधित वास्तविक आंकड़ों पर आधारित होनी चाहिए । जब ऐसी राशि का निर्धारण इस आधार पर नहीं किया जा सकता तब उक्त राशि का निर्धारण अनुच्छेद 2.2.2 में प्रदत्त विकल्पों के आधार पर किया जा सकता है । प्राधिकारी को तीसरे देशों को हुए निर्यातों के संबंध में लाभ पर विचार किया जाना चाहिए ।
- (ग) प्रकटन के जवाब में निर्यातक मै0 पी टी पिंडो डेली ने तर्क दिये है कि सामान्य मूल्य निर्धारण में मूल्य ह्रास लागत का प्राधिकारी का निरूपण धारा 2.2.1.1 के अनुसार नहीं है । प्राधिकारी ने मूल्य ह्रास की एक राष्ट्रीय राशि आरोपित की है जो उस उत्पाद श्रेणी के लिए पिंडो डेली की वास्तविक मूल्य ह्रास लागत पर आधारित राशि से काफी अधिक है, जिसके भीतर संबद्ध पण्य आता है और ऐतिहासिक रूप से प्रयुक्त पद्धति के अनुसार आबंटित है ।
- (घ) प्राधिकारी ने सामान्य मूल्य निर्धारण के बारे में घरेलू उद्योग और निर्यातक के तर्कों की जांच की है । जहां तक मूल्यह्रास लागत के निरूपण के बारे में निर्यातक के तर्कों का संबंध है, प्राधिकारी द्वारा मूल्यह्रास लागत के लिए गणना थर्मल सेंसेटिव पेपर और कार्बनलैस पेपर के उत्पादन की सापेक्ष क्षमता पर आधारित है । कंपनी के वित्तीय विवरण के अनुसार थर्मल सेंसेटिव पेपर उत्पादन और बिक्रियां कार्बनलैस पेपर प्रभञ्जाग की समग्र उत्पाद श्रेणी के अंतर्गत सूचित की गई हैं । एक उत्पाद श्रेणी के रूप में थर्मल सेंसेटिव पेपर उत्पादन और बिक्रियों के निष्पादन के संबंध में कोई अलग रिपोर्ट नहीं है । थर्मल सेंसेटिव पेपर से संबंधित इस जांच के लिए विशेष रूप से आबंटन किया गया है, जिसके उत्पादन की एक अलग दर है । प्राधिकारी द्वारा थर्मल सेंसेटिव पेपर उत्पादन की मूल्यह्रास लागत का आबंटन थर्मल सेंसेटिव पेपर के उत्पादन कल आबद्ध क्षमता की तुलना में इसी विभाग में उत्पादित कार्बनलैस पेपर के आधार पर की गई है मूल्यह्रास लागतों के आबंटन के लिए दावे के समर्थन के लिए कंपनी के वित्तीय विवरण में थर्मल पेपर के लिए मूल्यह्रास लागत के ऐतिहासिक आबंटन के कोई साक्ष्य नहीं हैं । प्राधिकारी के विचार में थर्मल सेंसेटिव पेपर के लिए मूल्यह्रास की गणना के लिए अपनाई गई कार्यपद्धति उस लागत को प्रदर्शित करती है जिसे उचित रूप से विचाराधीन उत्पाद अर्थात् थर्मल सेंसेटिव पेपर, जैसाकि

धारा 2.2.1.1 के अंतर्गत अपेक्षित है, के उत्पादन और बिक्री के साथ जोड़ा जा सकता है।

- (ड.) जहां तक निर्यातक द्वारा प्रस्तुत वित्तीय आंकड़ों के बारे में घरेलू उद्योग द्वारा दिए गए तर्कों का संबंध है प्राधिकारी ने निर्यातक द्वारा प्रस्तुत उत्पादन की लागत के आंकड़ों की जांच की है, जिनका सत्यापन कंपनी के मूल रिकॉर्ड और कंपनी द्वारा जांच अवधि के लिए प्रस्तुत वित्तीय विवरणों के संदर्भ में किया गया है। यदि जांच अवधि उनकी लेखा अवधि से भिन्न है तो निर्यातक के लिए जांच अवधि के लिए लाभ और हानि विवरण उपलब्ध कराना अनिवार्य नहीं है। जहाँ तक रजिस्टर रोल की कंपनी की घरेलू बाजार बिक्रियों के आधार पर सामान्य मूल्य के निर्धारण का संबंध है, जैसाकि प्रकटन में उल्लेख किया गया है, कंपनी ने एक स्वतंत्र खरीददार को पी.टी. ककरावाला मेगा इन्डाह द्वारा *** अम.डा.के *** मी.टन की घरेलू बिक्री की थी। ये बिक्रियाँ रजिस्टर रोल्स में थर्मल सेंसेटिव पेपर की हैं। चूंकि यह भारत (*** मी.टन) को किए गए निर्यातों के 5% से कम का एक अकेला सौदा था इसलिए इसे अनुच्छेद 2.2 की पाद टिप्पणी 2 के अनुसार घरेलू बाजार बिक्रियों पर आधारित सामान्य मूल्य के निर्धारण के लिए पर्याप्त नहीं माना गया था।
- (च) जहां तक बेस पेपर, जिसका निर्यातक द्वारा आबद्ध रूप से उत्पादन किया जाता है, के लिए कच्चे माल की कीमत का संबंध है, प्राधिकारी ने बेस पेपर के लिए कंपनी द्वारा की गई कोई स्वतंत्र बिक्री नहीं पाई है। इसके अतिरिक्त मामले के तथ्य उत्पादन की लागत की गणना के लिए कंपनी द्वारा ली गई बेस पेपर की कीमत की उपेक्षा करने का अधिकार नहीं देते हैं।
- (छ) जहां तक तीसरे देशों को किए गए निर्यातों पर आधारित सामान्य मूल्य के निर्धारण का संबंध है, निर्यातक के अनुसार भारत के अलावा किसी बाजार को संबंधित उत्पाद की कोई तुलनीय बिक्री नहीं हुई थी। भारत को निर्यातित थर्मल पेपर घटिया उत्पाद है जो ऐसी क्वालिटी का है जो अन्य बाजारों में स्वीकार्य नहीं है। यह विनिर्देशन (गुणवत्ता) अन्तर एक भौतिक/तकनीकी विशेषता है जो एक महत्वपूर्ण कीमत अन्तर उत्पन्न करता है और भारत को निर्यातित थर्मल सेंसेटिव पेपर को अन्य बाजारों को निर्यातित थर्मल सेंसेटिव पेपर के स्थान पर प्रयोग नहीं होने देता। इसके अतिरिक्त भारत को घटिया उत्पाद और अन्य बाजारों को मानक उत्पाद के बीच कीमत अन्तर लागत संबंधित नहीं है और इस अन्तर के कीमत प्रभाव की गणना करना संभव नहीं है। कंपनी ने दावा किया है

कि भारत को निर्यातित संबंधित वस्तु "बी ग्रेड" गुणवत्ता और "घटिया" हैं जबकि घरेलू बाजार में बेची जा रही और भारत के अलावा अन्य देशों को निर्यात की जा रही वस्तुएं मानक गुणवत्ता की हैं। यह भी कि घरेलू बाजार में बेची जा रही वस्तु रजिस्टर रोल्स में परिवर्तित थर्मल सेंसेटिव पेपर है और भारत में बेचा जा रहा थर्मल सेंसेटिव पेपर रोल्स में है।

- (ज) अनुच्छेद 2.2 के अनुसार जहां निर्यातक देश के घरेलू बाजार में समान उत्पाद की बिक्रियों की कम मात्रा एक उचित तुलना की अनुमति नहीं देती है वहां तुलना समान उत्पाद की एक तुलनीय कीमत के साथ की जानी चाहिए, जब यह एक उपयुक्त तीसरे देश को निर्यात की जा रही हो बशर्ते कि यह कीमत प्रतिनिधिक हो अथवा उद्गम के देश में उत्पादन की लागत के अनुसार हो साथ ही प्रशासनिक बिक्री और सामान्य लागतों और लाभों के लिए एक उचित राशि हो। अनुच्छेद 2.2 दो स्थानापन्न पद्धतियों में तारतम्य उपलब्ध नहीं कराता है, जहाँ आंतरिक बाजार बिक्रियाँ अपर्याप्त हैं। निर्यातक ने ठोस और सुसंगत तर्क दिया है कि अन्य देशों को उनके निर्यात भारत को किए गए निर्यातों से तुलनीय नहीं थे। समान उत्पाद की तुलनीय कीमत, जब वह उपयुक्त तीसरे देश को निर्यात किया जाता है, की एक प्रतिनिधिक कीमत होनी चाहिए। प्राधिकारी निर्यातक को गैर-सहयोगी मानने और नियम 6(8) के अनुसार उपलब्ध तथ्यों का सहारा लेने के घरेलू उद्योग के इस तर्क से सहमत नहीं है। निर्यातक ने उत्पादन की लागत से संबंधित सूचना देने में सहयोग दिया है और इसकी जांच का प्रस्ताव किया है। इन परिस्थितियों में प्राधिकारी उत्पादन की लागत के आधार पर सामान्य मूल्य का निर्धारण और अधिनियम की धारा 9क (1)(ग)(ii)(ख) के अनुसार प्रशासनिक, बिक्री और सामान्य लागतों और लाभों के लिए एक उचित राशि का निर्धारण करना उचित मानते हैं।
- (झ) जहां तक वित्तीय खर्चों को मानने का संबंध है, पाटनरोधी करार के अनुच्छेद 2.2.1.1 के अनुसार पैराग्राफ 2 के प्रयोजनार्थ लागतों की गणना सामान्यतः जांचाधीन निर्यातक अथवा उत्पादक द्वारा रखे गए रिकॉर्ड के आधार पर की जाती है, बशर्ते कि ये रिकॉर्ड निर्यातक देश के सामान्यतः स्वीकृत लेखा सिद्धान्तों के अनुसार हों और विचाराधीन उत्पाद के उत्पादन और बिक्रियों से संबंधित लागतों को उचित रूप से प्रदर्शित करते हों।
- (ट) जैसा कि वर्ष 2002 की ए पी पी की वार्षिक रिपोर्ट में बताया गया है, 2001 से एपीपी और इसकी सहायक कंपनियों, जिनमें पीटी पिन्डोडेली कंपनी शामिल है, ने एपीपी ग्रुप की ऋण दायित्वों के संबंध में स्थगन की घोषणा कर दी। स्थगन

संबंधी घोषणा अनिवार्यतः एपीपी द्वारा कंपनी सहित एपीपी समूह के सदस्यों की समय पर उनके ऋण दायित्वों की पूर्ति में असमर्थता का प्रकाशन माना गया है।

इस रिपोर्ट के अनुसार 28 सितम्बर, 2002 को एपीपी और एपीपी समूह (पीआईओ सीज) के भीतर प्रमुख इंडोनेशियाई प्रचालनकर्ता कंपनियां वित्तीय पुनर्निर्माण की प्रमुख शर्तों के संबंध में कतिपय माल ऋणदाताओं के साथ प्रारंभिक शर्तों पर सहमत हो गई। जैसाकि वर्ष 2003 की वार्षिक रिपोर्ट में बताया गया है पी आई ओ सीज ने इंडोनेशियाई बैंक पुनर्निर्माण एजेंसी (आईबीआरए) और ऋणदाताओं के साथ अलग-अलग मास्टर पुनर्निर्माण करार (एमआए) पर हस्ताक्षर किए। यह पुनर्निर्माण प्रस्तावित पुनर्निर्माण की शर्तों को स्वीकार करने वाले ऋणदाताओं को 90% पर निर्भर करता है। इसके पश्चात् निर्यातक ने एक पुष्टि की है कि पिंडो डेली के ऋणदाताओं का लगभग 100% एम आर ए में शामिल होने को सहमत हो गया है। एम आर ए पर आधारित वित्तीय खर्चों के आबंटन संबंधी निर्यातक के मर्दों पर विचार किया गया है। प्राधिकारी ने इस तथ्य पर भी विचार किया है कि 1997 के मुद्रा संकट के पश्चात् अनेक इंडोनेशियाई कंपनियां ऋण पुनर्भुगतान में चूककर्ता रहीं और ये कंपनियां वित्तीय पुनर्निर्माण के लिए आगे आई। प्राधिकारी ने यह माना है कि उपरोक्त अनुच्छेद 2.2.1.1. के प्रावधानों के अनुसार उत्पादन की लागत की गणना के प्रयोजनार्थ एमआरए के अनुसार वित्तीय खर्चों पर विचार करना उचित होगा। प्राधिकारी संबंधित अवधि के लिए किताबों में प्रभारित खर्चों के आधार पर वित्तीय खर्चों को मानने के घरेलू उद्योग के विचारों से हमत नहीं हैं।

- (ट) जहां तक प्रशासनिक, बिक्री और सामान्य लागतों का संबंध है, ये निर्यातक द्वारा समान उत्पाद के उत्पादन और बिक्रियों से संबंधित वास्तविक आंकड़ों पर आधारित हैं। जहाँ तक लाभों को परिकलित सामान्य मूल्य में शामिल करने का संबंध है, घरेलू उद्योग का तर्क तीसरे देशों को किए गए निर्यातों पर हुए लाभों पर विचार करने का है। जबकि निर्यातक ने तर्क दिया है कि जांच अवधि के दौरान सभी बाजारों को थर्मल सेंसेटिव पेपर की बिक्रियों में पिंडो डेली द्वारा प्राप्त किए जा रहे वास्तविक लाभ के आधार पर भारत को निर्यातित घटिया सामग्री के साथ तुलना के लिए परिकलित सामान्य मूल्य के लिए ऐसे लाभ का निर्धारण करना उपयुक्त नहीं होगा। निर्यातक के अनुसार:

- (i) परिकलित सामान्य मूल्य एक प्रतिनिधित्व घरेलू कीमत है और परिणामस्वरूप लाभ के बराबर होती है और एसजीए व्यय घरेलू बिक्रियों में उत्पन्न और वसूल किए गए व्यय के बराबर होने चाहिए,

(ii) निर्यात बिक्रियों में हुए लाभ को हिसाब में लेने से पाटित कीमतों पर हुई बिक्रियों से बेहतर लाभ प्राप्त हो सकता है ।

(iii) अनुच्छेद 2.2.2 की स्कीम यह स्पष्ट करती है कि एसजीए की उत्पन्न और अर्जित किए गए लाभ की राशि वह होनी चाहिए जो घरेलू बिक्रियों में उत्पन्न और वसूल की गई है

इसके अतिरिक्त निर्यातक ने तर्क दिया है कि रजिस्टर रोल्स के थर्मल पेपर को केवल घरेलू बिक्री में अर्जित किए गए लाभ को शामिल करना अनुपयुक्त होगा चूंकि ऐसी बिक्री सामान्य मूल्य के निर्धारण के लिए अपर्याप्त मात्रा की है । इस मामले की विशिष्टताओं से घटिया क्वालिटी (ऑफ स्पेक) की परिकल्पित सामान्य मूल्य और भारत को भारी छूट पर की गई थर्मल सेंसेटिव पेपर की बिक्री में लाभ की राशि अन्य निर्यात बाजारों को मानक गुणवत्ता के थर्मल पेपर की बिक्रियों की ऊंची कीमत पर हुई बिक्रियों में प्राप्त लाभ को शामिल करना और अधिक अतर्कसंगत बन गया है । लाभ की ऐसी राशि घरेलू बाजार और किसी अन्य बाजार में घटिया उत्पाद की बिक्री में प्राप्तव्य लाभ की उचित राशि में काफी अधिक है ।

(ठ) पैराग्राफ 2 के प्रयोजनाथ अनुच्छेद 2.2.2 के अनुसार प्रशासनिक, बिक्री और सामान्य लागतों और लाभों के लिए राशियाँ विचाराधीन निर्यातक अथवा उत्पादक द्वारा समान उत्पाद के व्यापार की सामान्य अवस्था में उत्पादन और बिक्रियों से संबंधित वास्तविक आंकड़ों पर आधारित होंगी । जब ऐसी राशियाँ इस आधार पर निर्धारित नहीं की जा सकती हैं, तो राशियाँ इस आधार पर निर्धारित की जा सकती हैं;

- (i) उत्पादों की उसी सामान्य श्रेणी के उद्गम के देश के घरेलू बाजार में उत्पादन और बिक्रियों के संबंध में जांचाधीन निर्यातक अथवा उत्पादक द्वारा उत्पन्न अथवा अर्जित वास्तविक राशियाँ;
- (ii) उद्गम के देश के घरेलू बाजार में समान उत्पाद के उत्पादन और बिक्रियों के संबंध में जांच के अध्याधीन अन्य निर्यातकों अथवा उत्पादकों द्वारा उत्पन्न अथवा अर्जित वास्तविक राशि का भारित औसत;
- (iii) कोई अन्य उपयुक्त पद्धति, बशर्ते कि लाभ की राशि, जो सिद्ध की गई है, उद्गम के देश के घरेलू बाजार में उसी सामान्य श्रेणी के उत्पादों की बिक्रियों पर अन्य निर्यातकों अथवा उत्पादकों द्वारा सामान्यतः अर्जित किए गए लाभ से अधिक न हो ।

(ड) प्राधिकारी ने इन तर्कों पर विचार किया है और निम्न के संबंध में लाभों के बारे में कंपनी के आंकड़ों की भी जांच की है:-

- (i) थर्मल पेपर की कुल बिक्री पर - इसमें रजिस्टर रोल्स की छोटी घरेलू बिक्री, भारत को निर्यात और तीसरे देशों को निर्यात शामिल हैं ।
 - (ii) रजिस्टर रोल्स की छोटी घरेलू बिक्रियों के आधार पर ।
 - (iii) कार्बन रहित, पेपर (एनसीआर) की बिक्रियों पर - उत्पादों की वही सामान्य श्रेणी ।
- (ढ) सामान्य मूल्य के निर्धारण के लिए उत्तरदायी मानते हुए उपयुक्त रूप से लाभ स्तर के आंकड़ों पर विचार करने के पश्चात् प्राधिकारी मानते हैं कि कंपनी द्वारा अर्जित लाभों को उत्पादों की उसी सामान्य श्रेणी अर्थात् कार्बनरहित पेपर की घरेलू बिक्री में जोड़ना उचित होगा । तदनुसार उत्पादन की लागत में ***% का लाभ मार्जिन जोड़ा गया और सामान्य मूल्य *** अम.डा. प्रति मी.टन पर पहुंच गया ।

10. इंडोनेशिया के लिए निर्यात कीमत:

जांच अवधि के दौरान कंपनी ने *** अम.डालर के कुल मूल्य पर भारत को *** मी.टन थर्मल सेंसेटिव पेपर का निर्यात किया । घरेलू उद्योग ने तर्क दिया है कि निर्यातक द्वारा देय कमीशन के लिए कोई समायोजन नहीं किया गया है । सूचना के अनुसार इन निर्यातों पर कोई छूट नहीं दी गई थी । निर्यातक की सूचना की जांच करने पर ऐसा कोई संकेत नहीं मिला था कि किसी भारतीय एजेंट अथवा कंपनी को कमीशन दिया गया था । बिक्रियाँ विभिन्न ग्राहकों को की गई थी, सामान्यतः भारत में पेपर व्यापारियों और जो कंपनी से गैर-संबद्ध थे। बीजकों का सत्यापन भुगतान की शर्तों, डिलीवरी शर्तों, मात्रा और मूल्य के संदर्भ में किया गया था । कंपनी ने निर्यात बिक्रियों के लिए बिक्री कीमत ढांचा परिशिष्ट 3क में दिया है जिसकी जांच कंपनी के रिकॉर्ड के संदर्भ में की गई है। यह जांच की गई कि क्या अन्तर्राज्यीय भाड़े में शिपिंग, क्लीयरेंस और हैंडलिंग प्रभार भी शामिल है । कारखानागत स्तर पर निवल निर्यात कीमत का निर्धारण *** अम.डालर प्रति मी.टन किया गया था ।

11. मलेशिया के लिए सामान्य मूल्य

मलेशिया के किसी भी निर्यातक/आयातक ने उत्पादन की लागत, घरेलू बिक्री कीमत, समायोजनों इत्यादि के बारे में सूचना देते हुए प्रश्नावली का उत्तर प्रस्तुत नहीं किया है। सामान्य मूल्य निर्धारण के बारे में बिना किसी सूचना के प्राधिकारी मलेशियाई उत्पादकों/निर्यातकों को गैर सहयोगी मानते हैं। प्राधिकारी पाते हैं कि मलेशियाई निर्यातकों से सहयोग के अभाव में अनुबंध II के साथ पठित अनुच्छेद 6.8 के अनुसार उपलब्ध तथ्यों का सहारा लेना उचित था। मलेशिया में संबद्ध वस्तु की घरेलू बिक्री कीमत के बारे में सूचना और मलेशिया से अन्य देशों को निर्यातों के बारे में साक्ष्य, मलेशियाई उत्पादकों के उत्पादन की लागत के अभाव में प्राधिकारी उद्गम के देश में संबद्ध वस्तु के उत्पादन की लागत के उचित अनुमान के आधार पर सामान्य मूल्य का निर्धारण करना उपयुक्त मानते हैं जिसमें प्रशासनिक, बिक्री और सामान्य लागतों और लाभों के लिए उपयुक्त राशि शामिल होगी। आवेदक ने आवेदन-पत्र में इस संबंध में सूचना प्रस्तुत की है। प्राधिकारी ने खरीद/आयातों के वास्तविक आंकड़ों के आधार पर जांच अवधि के दौरान प्रमुख कच्चे माल बेस पेपर और अन्य रसायनों की लागत पर विचार किया है। अन्य शुल्कों को छोड़कर कच्चे माल की अन्तराष्ट्रीय लागत पर भारत में उपलब्ध रिकॉर्ड के अनुसार विचार किया गया है। अन्य लागतें अर्थात् उपयोगिता, बिक्री, सामान्य और प्रशासनिक व्यय इत्यादि को घरेलू उद्योग की सत्यापित सूचना के लिए आधार रूप में लिया गया है। सामान्य मूल्य पर पहुंचने के लिए एक उचित लाभ मार्जिन जोड़ा गया है जो *** अम.डालर प्रति मी.टन निर्धारित की गई है।

12. मलेशिया के लिए निर्यात कीमत

मलेशिया के किसी भी निर्यातक ने निर्यात कीमत के बारे में सूचना नहीं दी है। प्राधिकारी ने निर्यात कीमतों के बारे में याचिकाकर्ता द्वारा प्रस्तुत सूचना पर विचार किया है, जो मै0 इन्फोरमेंट, मुम्बई और मै0 एक्जिम इन्फोलाइन, चेन्नई से प्राप्त आंकड़ों पर आधारित है। प्राधिकारी ने डीजीसीआईएंड एस से प्राप्त आयात आंकड़ों पर भी विचार किया है। इस सूचना के आधार पर मलेशिया से निर्यात कीमत *** अम.डालर है। समुद्री भाड़े, बीमा, कमीशन, अन्तर्राष्ट्रीय भाड़े और पत्तन व्ययों के कारण औसत सीआईएफ कीमत से उपयुक्त समायोजन किए गए हैं। निवल निर्यात कीमत *** अम.डालर प्रति मी.टन निकाली गई है।

13. यूआई के लिए सामान्य मूल्य

मलेशिया के किसी भी निर्यातक/आयातक ने उत्पादन की लागत, घरेलू बिक्री कीमत, समायोजनों इत्यादि के बारे में सूचना देते हुए प्रश्नावली का उत्तर प्रस्तुत नहीं किया है। सामान्य मूल्य निर्धारण के बारे में बिना किसी सूचना के प्राधिकारी मलेशियाई उत्पादकों/निर्यातकों को गैर सहयोगी मानते हैं। प्राधिकारी पाते हैं कि मलेशियाई निर्यातकों से सहयोग के अभाव में अनुबंध II के साथ पठित अनुच्छेद 6.8 के अनुसार उपलब्ध तथ्यों का सहारा लेना उचित था। मलेशिया में संबद्ध वस्तु की घरेलू बिक्री कीमत के बारे में सूचना और मलेशिया से अन्य देशों को निर्यातों के बारे में साक्ष्य, मलेशियाई उत्पादकों के उत्पादन की लागत के अभाव में प्राधिकारी उद्गम के देश में संबद्ध वस्तु के उत्पादन की लागत के उचित अनुमान के आधार पर सामान्य मूल्य का निर्धारण करना उपयुक्त मानते हैं जिसमें प्रशासनिक, बिक्री और सामान्य लागतों और लाभों के लिए उपयुक्त राशि शामिल होगी। आवेदक ने आवेदन-पत्र में इस संबंध में सूचना प्रस्तुत की है। प्राधिकारी ने खरीद/आयातों के वास्तविक आंकड़ों के आधार पर जांच अवधि के दौरान प्रमुख कच्चे माल बेस पेपर और अन्य रसायनों की लागत पर विचार किया है। अन्य शुल्कों को छोड़कर कच्चे माल की अन्तराष्ट्रीय लागत पर भारत में उपलब्ध रिकॉर्ड के अनुसार विचार किया गया है। अन्य लागतें अर्थात् उपयोगिता, बिक्री, सामान्य और प्रशासनिक व्यय इत्यादि को घरेलू उद्योग की सत्यापित सूचना के लिए आधार रूप में लिया गया है। सामान्य मूल्य पर पहुंचने के लिए एक उचित लाभ मार्जिन जोड़ा गया है जो *** अम.डालर प्रति मी.टन निर्धारित की गई है।

14. यूआई के लिए निर्यात कीमत

मलेशिया के किसी भी निर्यातक ने निर्यात कीमत के बारे में सूचना नहीं दी है। प्राधिकारी ने निर्यात कीमतों के बारे में याचिकाकर्ता द्वारा प्रस्तुत सूचना पर विचार किया है, जो मै0 इन्फोरमेंट, मुम्बई और मै0 एक्जिम इन्फोलाइन, चेन्नई से प्राप्त आंकड़ों पर आधारित है। प्राधिकारी ने डीजीसीआईएंड एस से प्राप्त आयात आंकड़ों पर भी विचार किया है। इस सूचना के आधार पर मलेशिया से निर्यात कीमत *** अम.डालर है। समुद्री भाड़े, बीमा, कमीशन, अन्तर्राष्ट्रीय भाड़े और पत्तन व्ययों के कारण औसत सीआईएफ कीमत से उपयुक्त समायोजन किए गए हैं। निवल निर्यात कीमत *** अम.डालर प्रति मी.टन निकाली गई है।

15. पाटन मार्जिन

प्राधिकारी ने सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन निर्धारण पर लागू होने वाले उन सिद्धांतों को अपनाने की सुसंगत नीति का पालन किया जो पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 में दिए गए हैं। पाटन मार्जिन का निर्धारण उक्त नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 6 में निर्धारित सिद्धांतों के अनुसार निर्यात कीमत और साधारण मूल्य की तुलना करके किया गया है। यह तुलना व्यापार के समान स्तर पर अर्थात् कारखाना द्वार स्तर पर की गई है। कारखाना द्वार स्तर पर सामान्य मूल्य की तुलना थर्मल सेसेटिव पेपर के संगत तुलनीय प्रकार के कारखानाद्वार स्तर पर निर्यात कीमत से की गई है। ऊपर यथा निर्धारित सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत के आधार पर प्राधिकारी ने निम्नलिखित पाटन मार्जिन (%) का निर्धारण किया है:

	मै. पीटी पिंडो डेली, इंडोनेशिया	मलेशिया	यूएई
सामान्य मूल्य	***	***	***
निर्यात कीमत	***	***	***
पाटन मार्जिन	***	***	***
पाटन मार्जिन %	22.82	92.94	70.29

घ. घरेलू उद्योग को हुई क्षति:

16. पाटनरोधी नियमावली का नियम 11 इस प्रकार है:-

क्षति का निर्धारण:

- (i) निर्दिष्ट देशों से हुए आयातों के मामले में निर्दिष्ट प्राधिकारी आगे अपने निष्कर्ष दर्ज करेंगे कि भारत में होने वाले ऐसे आयातों से भारत में स्थापित उद्योग को वास्तविक क्षति होती है अथवा क्षति का खतरा उत्पन्न होता अथवा किसी उद्योग को स्थापित करने में बाधा आती है;
- (ii) निर्दिष्ट प्राधिकारी घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति, घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति के खतरे और घरेलू उद्योग की स्थापना में आने वाली वास्तविक बाधा और पाटित आयातों की मात्रा, और समान वस्तुओं के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर इसके प्रभाव और ऐसी वस्तुओं के घरेलू उत्पादकों पर ऐसे आयातों के परिणामी प्रभाव समेत सभी संगत तथ्यों को ध्यान में रखते हुए, इन नियमों के अनुबंध II में निर्धारित सिद्धांतों के अनुसार पाटित आयातों और क्षति के बीच कारणात्मक संबंध का मूल्यांकन करेंगे।

17. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध- रू० में निर्धारित क्षति के आकलन संबंधी सिद्धांत में व्यवस्था है कि:-

- क. क्षति के निर्धारण में (क) पाटित आयातों की मात्रा तथा समान वस्तु के लिए घरेलू बाजार में समान वस्तु की कीमतों पर पाटित आयातों का प्रभाव;
- ख. ऐसे उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों का परिणामी प्रभाव दोनों ही तथ्यात्मक जांच शामिल होगी ।
- ग. पाटित आयातों की मात्रा की जांच करते समय उपरोक्त प्राधिकारी इस बात पर विचार करेंगे कि क्या पाटित आयातों में समग्र रूप से अथवा भारत में उत्पादन अथवा खपत की तुलना में अथवा समग्र रूप में पाटित आयातों में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है । नियम 18 के उप नियम (2) में यथा उल्लिखित कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव के संबंध में निर्दिष्ट प्राधिकारी इस बात पर विचार करेंगे कि क्या भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में पाटित आयातों से कीमतों में महत्वपूर्ण कटौती हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों के प्रभाव से महत्वपूर्ण सीमा तक अन्यथा कीमतों में कमी करना है अथवा कीमतों में होने वाली वृद्धि को रोकना है जो अन्यथा महत्वपूर्ण सीमा तक हो गयी होती ।

18. घरेलू उद्योग द्वारा उठाए गए मुद्दे:

घरेलू उद्योग ने सभी मापदण्डों के बारे में क्षति के संबंध में आवेदन में सूचना प्रस्तुत की है । इसने दावा किया है कि जापान, चीन और ईयू से पाटित आयातों के कारण पहले वास्तविक क्षति हुई थी । निर्दिष्ट प्राधिकारी ने इन देशों के संबंध में जांच की और पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश की । घरेलू उद्योग को दोबारा वास्तविक क्षति हो रही है और अब यह इंडोनेशिया, मलेशिया और यूएई से होने वाले पाटित आयातों से हो रही है । घरेलू उद्योग ने क्षति के संबंध में निम्नलिखित दावे किये हैं-

आयात:

भारत में इस उत्पाद के आयातों के संबंध में सम्बद्ध देशों से आयातों में वृद्धि हुई है । सम्बद्ध देशों से आयात में भारत में सम्बद्ध वस्तु की मांग के संबंध में वृद्धि हुई है ।

उत्पादन, क्षमता उपयोग और बिक्रियाँ

पूर्ववर्ती वर्षों की तुलना में उत्पादन और क्षमता उपयोग में गिरावट आई है। घरेलू उद्योग को अपने उत्पादों को बेचने के प्रयासों के बावजूद बिक्री मात्रा में काफी गिरावट आई है। यदि सम्बद्ध देशों से पाटित आयातों की प्रवृत्ति जारी रहती है तो घरेलू उद्योग कीमतें कम करने के बावजूद और बिक्रियाँ खो देंगे, आयात घरेलू उद्योग की कीमतों को कम कर रहे हैं। आयातों और इसके बाजार हिस्से में वृद्धि का घरेलू उद्योग की बिक्रियों में संभावित गिरावट पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है।

घरेलू कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक:

घरेलू उद्योग को पाटित आयातों के कारण भारी कीमत कटौती का सामना करना पड़ रहा है।

संबद्ध देशों से आयातों की उतराई कीमत से भारी कीमत कटौती और गिरावट हो रही है।

आयातित सामग्री की उतराई कीमत घरेलू उद्योग की गैर-क्षतिकारक कीमत से काफी कम है और इसलिए इसके परिणामस्वरूप भारी कीमत कटौती हो रही है।

रोजगार - कंपनी एक बहु-उत्पाद कंपनी है और यह विभिन्न स्रोतों से उत्पाद के पाटन से जूझ रही है। इसे अपने कर्मचारियों को बनाए रखना और रोजगार स्तर में कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन नहीं हुए हैं।

मजदूरी - देश के प्रचलित कानूनों के अनुसार, कंपनी को अपने कर्मचारियों की मजदूरी बढ़ानी होगी।

लाभप्रदता - कंपनी की हानि में वृद्धि हुई है और लाभप्रदता और बिगड़ गई है।

लगाई गई पूंजी पर आय - लगाई गई पूंजी पर वास्तविक आय नकारात्मक रही है और आगे और बिगड़ गई है।

उत्पादकता - घरे उद्योग के उत्पादन में गिरावट का प्रत्यक्ष परिणाम घरेलू उद्योग की उत्पादकता में कटौती के रूप में हुआ है। उत्पादकता में गिरावट प्रतिदिन उत्पादन के आधार पर और प्रति कर्मचारी उत्पादकता के आधार पर आई है।

मांग में बाजार हिस्सा - भारत में थर्मल सेंसेटिव पेपर की खपत के निर्धारण के लिए विस्तृत पद्धति का याचिका में वर्णन किया गया है। निर्धारित मांग के आधार पर मांग में घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में काफी गिरावट आई है। सम्बद्ध देशों से पाटित आयातों के हिस्से में महत्वपूर्ण रूप से वृद्धि हुई है।

पाटन मार्जिन- सम्बद्ध देशों से पाटित आयातों के संबंध में पाटन मार्जिन काफी महत्वपूर्ण हैं।

नकदी प्रवाह - कंपनी एक बहु-उत्पाद कंपनी है और तदनुसार सामान्यतः स्वीकृत लेखा सिद्धान्तों के अनुसार इसे उक्त उत्पाद के लिए अलग से नकदी प्रवाह रखने की आवश्यकता नहीं है। इसलिए सम्पूर्ण रूप में कंपनी के नकदी प्रवाह से कंपनी के कार्यों की स्थिति की सही तस्वीर पता नहीं चलती।

वृद्धि - सम्बद्ध वस्तु के पाटन के कारण बिक्री मात्रा और उत्पाद के कारोबार में वर्ष 2002-03 में गिरावट आई है। घरेलू उद्योग जिसकी 2001-02 तक सकारात्मक वृद्धि हुई थी, जांच अवधि में नकारात्मक वृद्धि हुई है।

निधि उगाने की क्षमता/पूंजी निवेश- लगातार हानि के कारण कंपनी कोई निधि अथवा पूंजी नहीं उगाह सकी क्योंकि कंपनी एक के बाद दूसरे स्रोत से पाटन के कारण संघर्ष कर रही है।

19. **मै0 पिंडो डेली, इंडोनेशिया द्वारा उठाए गए तर्क -निर्यातक:**

पिंडी डेली के सत्यापन योग्य जवाब द्वारा यह पता चलता है कि इसने भारत को विचाराधीन वस्तु का निर्यात पाटित कीमतों पर नहीं किया है। परिणामस्वरूप याचिकाकर्ता द्वारा उठाई गई कोई क्षति पिंडी डेली द्वारा पाटन के कारण नहीं हो सकती।

20. **सुमत प्रसाद एंड संस, दिल्ली द्वारा उठाए गए तर्क - आयातक:**

- i. घरेलू उद्योग ने जांच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु की मांग का 2000 मी.टन के रूप में गलत निर्धारण किया है जबकि यह मांग लगभग 12600 मी.टन है।
- ii. याचिकाकर्ता ने दावा किया है कि हर प्रकार के थर्मल पेपर का उत्पादन करते हैं, जो असत्य है। याचिकाकर्ता द्वारा विनिर्मित उत्पाद की गुणवत्ता अच्छी नहीं है। वे किसी भी लॉटरी संगठक को आपूर्ति करने में असमर्थ रहे हैं।

- iii. देश में थर्मल सेंसेटिव पेपर की मांग में बढ़त के बावजूद, याचिकाकर्ता ने वर्ष 1999 के पश्चात् अपनी फैक्टरी की संस्थापित क्षमता में वृद्धि नहीं की है।
- iv. देश में संस्थापित क्षमता एवं मांग के बीच भारी अंतर के कारण, केवल आयात ही ऐसा उपाय है जिसके द्वारा इस अंतर को पाटा जा सकता है। याचिकाकर्ता अपनी संस्थापित क्षमता के अनुसार उत्पादन नहीं कर पा रहे हैं क्योंकि उनके पास इसके लिए अपेक्षित प्रौद्योगिकी तथा कच्ची सामग्री का अभाव है।
- v. अच्छी गुणवत्ता वाले थर्मल पेपर के उत्पादन के लिए विनिर्माता को टॉप कोटेड ग्रेड वाले बेस पेपर का इस्तेमाल करना पड़ता है, जिसको अभिक्रिया के पश्चात् थर्मल सेंसेटिव पेपर में परिवर्तित किया जाता है। इसके विपरीत याचिकाकर्ता अनकोटेड बेस पेपर का इस्तेमाल कर उसे थर्मल सेंसेटिव पेपर में परिवर्तित करता है। इसके परिणामस्वरूप अनेक समस्याएं उत्पन्न होती हैं और वे संस्थापित क्षमता का उपयोग नहीं कर पाते हैं।

21. घरेलू उद्योग ने क्षति के मुद्दे पर हितबद्ध पक्षकारों द्वारा दिए गए विभिन्न तर्कों का खंडन किया है।

- i. संबद्ध उत्पाद की मांग के संबंध में, यह बताया गया है कि आयातक मै0 सुमत प्रसाद एंड सन्स द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना वर्ष 2003-04 के संबंध में है जो जांच अवधि के बाहर है। इसमें भी आयात की अधिकतम मात्रा 2059 मी.टन प्रदर्शित होती है। इसमें थर्मल पेपर के अलावा अन्य उत्पादों के आयात भी शामिल हो सकते हैं। एक विश्लेषण के अनुसार जांच अवधि के दौरान थर्मल पेपर का आयात अधिक से अधिक 1850 मी.टन हो सकता है। इसमें याचिकाकर्ता की 1019 मी.टन घरेलू बिक्री और मै0 अल्फा कार्बलेस का 332 मी.टन जोड़ने पर, कुल मांग 3201 मी.टन बनती है। आयातक द्वारा जांच अवधि के दौरान 10200 मी.टन मांग का प्रदर्शन किया गया है जो तथ्यों के विपरीत एवं अतिशयोक्तिपूर्ण है।
- ii. किसी भी उत्पादन की संपूर्ण घरेलू मांग की आपूर्ति करना, पाटन से छुटकारा पाने के लिए एक पूर्व स्थिति नहीं है। पाटनरोधी शुल्क लगाने का उद्देश्य आयातों पर प्रतिबंध लगाना नहीं है। शुल्क लगाने के पश्चात् भी आयात किए जा सकते हैं। घरेलू उद्योग चाहता है कि अनुचित पाटित कीमत वाले आयात पर पाटनरोधी शुल्क लगाया जाए। जहां तक गुणवत्ता का संबंध है,

याचिकाकर्ता द्वारा उत्पादित संबद्ध उत्पाद, अंतर्राष्ट्रीय गुणवत्ता वाली वस्तुओं के समान है। याचिकाकर्ता, मै0 हनसोल ऑफ कोरिया के साथ सहयोग कर रहा है। संबद्ध वस्तु की उत्पादन प्रक्रिया में बेस पेपर पर विशिष्ट रसायनों की परत चढ़ाना शामिल है। याचिकाकर्ता द्वारा प्रयुक्त बेस पेपर भी कोटेड पेपर होता है।

iii. याचिकाकर्ता विभिन्न जी एस एम में थर्मल पेपर की बिक्री कर रहा है जैसाकि उत्पाद विवरणिका से स्पष्ट है।

22. प्रकटनों के उत्तर में आयातक से कोई टिप्पणी प्राप्त नहीं हुई है। मै0 पिंडो डेली ने यह तर्क दिया है कि प्राधिकारी ने गलती से श्रीकृष्णा को घरेलू उद्योग मान लिया है जबकि इसमें अल्फा शामिल है। इसके अलावा, प्राधिकारी ने गलत ढंग से घरेलू उद्योग की बिक्रियों, और उत्पादन की मात्रा तथा बाजार हिस्से में गिरावट दर्ज की है। वस्तुतः जाँच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की बिक्रियों और उत्पादन में वृद्धि हुई है, जबकि उस समय उसका बाजार हिस्सा 54.44% के बजाय 74.21% है। लाभप्रदता के संबंध में कंपनी के घाटों के बढ़ने और लाभप्रदता की स्थिति खराब होने संबंधी विवरण श्रीकृष्णा की वर्ष 2002-03 की रिपोर्ट से मेल नहीं खाता है जिसमें निवल लाभ में पर्याप्त वृद्धि दर्शायी गई है।

23. क्षति का संचयी मूल्यांकन:

अनुबंध- II(iii) के अनुसार ऐसे मामले जिनमें एक से अधिक देशों से किसी उत्पाद का आयात एक साथ पाटनरोधी जांच के अधीन होते हैं, तो प्राधिकारी से ऐसे आयातों के प्रभाव का संचयी मूल्यांकन करने के अपेक्षा की गई है, केवल तभी जब इनसे यह निर्धारित होता हो कि (क) प्रत्येक देश से हुए आयातों के संबंध में निर्धारित पाटन मार्जिन निर्यात कीमत के प्रतिशत के रूप में 2% से अधिक हो और प्रत्येक देश से आयातों की मात्रा समान वस्तु के आयातों का 3% है—और (ख) आयातों के प्रभाव का संचयी मूल्यांकन आयातित वस्तु और समान घरेलू वस्तु के बीच प्रतिस्पर्धा की दशाओं के आलोक में सही है। प्राधिकारी ने यह पाया है कि प्रत्येक संबद्ध देश के संबंध में पाटन मार्जिन 2% से अधिक है और प्रत्येक देश से आयातों की मात्रा भी 3% से अधिक है। आयातित उत्पादों के बीच प्रतिस्पर्धा की स्थितियों और आयातित उत्पादों और समान घरेलू उत्पाद के बीच प्रतिस्पर्धा की स्थितियों के मूल्यांकन के मद्देनजर प्राधिकारी का यह विचार है कि:-

(i) संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं का आयात समान टैरिफ वर्गीकरण के अंतर्गत किया गया है।

- (ii) प्राधिकारी को यह मालूम हुआ है कि आयातित संबद्ध वस्तुएं घरेलू तौर पर उत्पादित थर्मल सेंसेटिव पेपर की प्रतिस्थापनीय है ।
- (iii) आयातक द्वारा प्रस्तुत सूचना से यह उचित संकेत मिलता है कि विभिन्न संबद्ध देशों से कि गये आयात समान उत्पादों के रूप में एक ही बाजार में प्रतिस्पर्धा करते हैं ।
- (iv) इसलिए, प्राधिकारी आयातित उत्पादों और आयातित उत्पादों तथा समान घरेलू उत्पाद के बीच प्रतिस्पर्धा की स्थितियों की दृष्टि से घरेलू रूप से उत्पादित समान वस्तु पर संबद्ध वस्तु के प्रभाव का संचयी रूप से मूल्यांकन करना उचित समझते हैं । प्राधिकारी को यह मालूम है हुआ कि घरेलू उद्योग पर संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं के संबद्ध आयातों द्वारा क्षति का संचयी प्रभाव हुआ है ।

24. प्राधिकारी द्वारा क्षति की जांच

प्राधिकारी ने इन तर्कों की जांच की है और यह पाया है कि मै0 श्रीकृष्णा का संबद्ध उत्पाद के घरेलू उत्पादन में अधिक हिस्सा है और दूसरे उत्पादक मै0 अल्फा ने जांच में हिस्सा लेने से इंकार कर दिया है । प्राधिकारी ने मै0 श्रीकृष्णा को घरेलू उद्योग के रूप में माना है इसलिए क्षति मानदंडों के मूल्यांकन को मै0 श्रीकृष्णा के निष्पादन के आधार पर देखा जाना है क्योंकि दूसरे उत्पादक ने सूचना प्रस्तुत नहीं की है । तथापि उत्पाद की सकल मांग का मूल्यांकन करने के लिए मै0 अल्फा का उत्पादन भी शामिल किया गया है । जहां तक लाभकारिता का संबंध है, निर्यातक ने मै0 कृष्णा की 2002-03 की वार्षिक रिपोर्ट जिसमें निवल लाभ की सूचना भी दी गई है, का उल्लेख किया है । मै0 श्रीकृष्णा कोटेड पेपर का उत्पादन भी करता है जो कंपनी का मुख्य उत्पाद है । श्रीकृष्णा की लाभप्रदता का इस जांच के लिए विश्लेषण संबद्ध उत्पाद अर्थात् थर्मल सेंसेटिव पेपर के संदर्भ में किया गया है ।

प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग को हुई हानि के दावे के बारे में हितबद्ध पक्षकारों द्वारा दिए गए अन्य तर्कों पर भी विचार किया है। प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत सूचना का सत्यापन भी किया था। जहाँ तक संबद्ध उत्पाद की मांग का संबंध है प्राधिकारी को यह मालूम हुआ कि आयात के उपलब्ध आंकड़ों से भिन्न-भिन्न आंकड़ों की सूचना मिली। तथापि वर्ष 2003-04 के दौरान किए गए आयातों से संबंधित एक सीडी पर आयातक द्वारा आंकड़े प्रस्तुत किए गए, जो जांच अवधि से बाहर हैं। द्वितीयक स्रोतों, आईसीडी, डीजीसीआईएण्डएस, निर्यातक के उत्तर की सूचना को शामिल करके प्राधिकारी को मालूम हुआ कि संबद्ध उत्पाद का आयात इस प्रकार था:-

मात्रा: मी.टन में

देश	1999-2000	2000-2001	2001-2002	2002-2003
इंडोनेशिया	--	--	--	298
मलेशिया	--	--	--	57
यूएई	--	--	--	45
संबद्ध देशों से कुल आयात	--	--	--	400
अन्य देश	182	309	233	74
कुल आयात	182	309	233	474

विभिन्न क्षति मानदंडों से संबंधित सूचना की जांच और विश्लेषण प्राधिकारी द्वारा निम्न प्रकार किया गया है:

25. आयातों की मात्रा:

प्राधिकारी ने संबद्ध वस्तुओं के आयातों संबंधी सूचना जैसाकि

डीजीसीआईएंडएस द्वारा प्रकाशित अधिकारिक आंकड़ों में दर्शाया गया है, गौण स्रोतों पर आधारित आवेदन में प्रस्तुत सूचना, निर्यातक और कुछेक आयातकों के प्रत्युत्तरों का संज्ञान लिया है।

देश	1999-2000	2000-2001	2001-2002	2002-2003
इंडोनेशिया	--	--	--	298
मलेशिया	--	--	--	57
यूएई	--	--	--	45
संबद्ध देशों से कुल आयात	--	--	--	400
अन्य देश	182	309	233	74
कुल आयात	182	309	233	474

संबद्ध वस्तुओं के कुल आयात जैसाकि गौण स्रोतों के आंकड़ों में दर्शाया गया है, वर्ष 1999-2000 में 182 मी.टन से बढ़कर वर्ष 2002-03 (जांच अवधि) में 474 मी.टन हो गए। संबद्ध देशों से आयात पिछले वर्षों की क्षति निर्धारण अवधि के दौरान शून्य थे और जो जांच अवधि के दौरान 400 मी.टन हो गए। ये आयात कुल आयातों का लगभग 84% बनते हैं। इसलिए संबद्ध देशों से आयातों में समग्र रूप से बढ़ोतरी हुई थी।

26. बाजार हिस्सा:

प्राधिकारी पाते हैं कि संबद्ध वस्तु की मांग में घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा और संबद्ध देशों से आयात निम्नानुसार रहे हैं-

	1999-2000	2000-2001	2001-2002	2002-2003
आयात-कुल	182	309	233	474

याचिकाकर्ता की घरेलू बिक्रियां	1062	1410	1634	1019
अन्य उत्पादकों की बिक्री	0	0	0	345
संबद्ध देशों से आयात	0	0	0	400
अन्य देशों से आयात	182	309	233	74
मांग में हिस्सा -संबद्ध देशों से आयात(%)	0	0	0	21.76
मांग में हिस्सा-घरेलू उद्योग	85.37	82.02	87.52	55.44
मांग में अन्य उत्पादकों का हिस्सा	0	0	0	18.77
मांग में हिस्सा -अन्य देशों से आयात	14.63	17.98	12.48	4.03

प्राधिकारी ने पाया है कि संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं के आयातों का हिस्सा पिछले वर्षों में शून्य था और अब जांच अवधि के दौरान 21.76% हो गया है। अतः देश में उत्पाद की मांग के संबंध में संबद्ध देशों से पाटित आयातों में वृद्धि हुई है। कुल मांग में घरेलू उद्योग के हिस्से में वर्ष 1999-2000 में 85.37% से घटकर जांच अवधि के दौरान 55.44% हो गई।

27. उत्पादन एवं क्षमता उपयोग:

घरेलू उद्योग का उत्पादन एवं क्षमता उपयोग निम्नानुसार रहा है:-

	1999-2000	2000-2001	2001-2002	जांच अवधि
क्षमता उपयोग	2000	2000	2000	2000
उत्पादन	1075	1504	1582	995
क्षमता उपयोग %	53.75	75.23	79.13	49.77

प्राधिकारी ने पाया है कि पूर्ववर्ती वर्षों की तुलना में जांच अवधि के दौरान क्षमता उपयोग में काफी गिरावट आई है। जांच अवधि के दौरान क्षमता-उपयोग घटकर 49.77% हो गया जो पूर्ववर्ती वर्ष में 79.13% पहुंच गया था।

28. बिक्री मात्रा:

याचिकाकर्ता कंपनी की बिक्री मात्रा में वर्ष 1999-2000 की तुलना में जांच अवधि के दौरान 1019 मी.टन की गिरावट आई है, यद्यपि पूर्ववर्ती वर्ष 2001-

02 के दौरान, बिक्री में 1634 मी.टन की वृद्धि हुई है। अन्य घरेलू उत्पादक ने वर्ष 2002-03 से ही उत्पादन शुरू किया है। जांच अवधि के दौरान बिक्री मात्रा में आई गिरावट, पिछले वर्ष की तुलना में काफी अधिक पाई गई है।

	1999-2000	2000-2001	2001-2002	जांच अवधि
याचिकाकर्ता की बिक्री	1062	1410	1634	1019
अन्य उत्पादक	0	0	0	345
कुल बिक्री	1062	1410	1634	1364

29. माल सूची:

देश	1999-2000	2000-2001	2001-2002	जांच अवधि
मी.टन	14	95	44	19
बिक्री कर %	1.32	6.74	2.69	1.86

बिक्री के प्रतिशत के रूप में घरेलू उद्योग के तैयार स्टॉक की मालसूची में वर्ष 1999-2000 की तुलना में जांच अवधि के दौरान मामूली वृद्धि हुई है, तथापि, पिछले दो वर्षों की तुलना में इसमें गिरावट आई है।

30. कीमत कटौती

प्राधिकारी ने पाया है कि पाटित आयातों के कारण कीमत कटौती निम्नानुसार रही है:-

	इंडोनेशिया-पिंडो डेली	मलेशिया	यूएई
औसत एनएसआर	***	***	***
पहुंच मूल्य	***	78768	88973
कीमत कटौती	***	***	***
% कीमत कटौती	***	***	***
कीमत कटौती की रेंज	20-30%	15-25%	6-15%

प्राधिकारी ने पाया है कि पाटित आयातों के कारण होने वाली कीमत कटौती काफी अधिक रही है।

31. कम कीमत पर बिक्री

प्राधिकारी ने पाया है कि पाटित आयातों के कारण कम कीमत पर बिक्री निम्नानुसार रही है:-

	इंडोनेशिया-पिंडो डेली	मलेशिया	यूएई
क्षति रहित कीमत (एनआईप)	***	***	***
पहुंच मूल्य	***	78768	88973
कम कीमत पर बिक	***	***	***
% कीमत कटौती	***	***	***
कम कीमत पर बिक्री रेंज	40-50%	32-42%	25-35%

प्राधिकारी ने पाया है कि कीमत कटौती की सीमा काफी अधिक है क्योंकि संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं के आयातों का पहुंच मूल्य घरेलू उद्योग की क्षति रहित कीमत से काफी कम रहा है।

32. घरेलू कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक:

प्राधिकारी पाते हैं कि पाटित आयातों के परिणामस्वरूप कीमत कटौती का स्तर काफी अधिक रहा है। आगे, कम कीमत पर बिक्री की सीमा काफी अधिक है क्योंकि आयातों का पहुंचमूल्य घरेलू उद्योग की क्षति रहित कीमत से काफी कम रहा है। चूंकि घरेलू उद्योग, जांच अवधि के दौरान उत्पादन लागत में बढ़ोतरी के बावजूद अपनी बिक्री कीमत में वृद्धि नहीं कर पाया है इसलिए प्राधिकारी द्वारा पाटित आयातों के परिणामस्वरूप कीमत ह्रास पाया गया है। घरेलू उद्योग द्वारा बिक्री प्राप्ति में एवं उत्पादन लागत के संबंध में सूचना निम्नानुसार पाई गई है (सूचीबद्ध)

	1999-2000	2000-2001	2001-2002	2002-2003
उत्पादन	***	***	***	***
लागत(सूचीबद्ध)	100	95.3	91.28	109.36
बिक्री कीमत	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	121	115.22	108.58

33. पाटन मार्जिन की मात्रा:

प्राधिकारी ने पाया है कि संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं के पाटन मार्जिन की मात्रा 22.82% से 92.94% की रेंज में है, जो काफी अधिक मानी जाती है।

34. रोजगार

कंपनी का रोजगार स्तर निम्नानुसार रहा है:

सूचीबद्ध			
1999-2000	2000-2001	2001-2002	जांच अवधि
100	108.57	114.29	117.14

प्राधिकारी पाते हैं कि कंपनी के रोजगार स्तर में कोई उल्लेखनीय परिवर्तन नहीं हुआ है। याचिकाकर्ता कंपनी एक बहु-उत्पाद कंपनी है तथा कर्मचारियों की संख्या कंपनी के सभी उत्पादों के लिए समान है। अतः इस मानदंड को क्षति आकलन हेतु अधिक संगत नहीं माना गया है।

35. वेतन:

प्राधिकारी ने पाया है कि कर्मचारियों को वेतन का भुगतान निम्नानुसार किया गया था:-

सूचीबद्ध			
1999-2000	2000-2001	2001-2002	जांच अवधि
100	113.73	115.69	125.49

प्राधिकारी ने नोट किया कि श्रमिकों को वार्षिक वेतनवृद्धि के लिए वैधानिक आवश्यकता के परिणाम के रूप में मजदूरी के भुगतान में वृद्धि हुई है। तथापि, चूंकि कंपनी एक बहु-उत्पाद कंपनी है, यह मापदण्ड क्षति के संबंध में एक स्पष्ट दिशानिर्देश नहीं दे सकता।

36. लाभप्रदता :

घरेलू उद्योग को नीचे दी गई सूचना के अनुसार संबद्ध वस्तु की प्रति इकाई बिक्री पर प्रत्यक्ष हानि हुई है:

वर्ष	निवल बिक्री प्राप्ति (रुपए/प्रति मी.टन)	उत्पादन की लागत (रुपए/प्रति मी.टन)	प्रति मी.टन लाभ/हानि सूचीबद्ध
1999-2000	***	***	(-) ***
सूचीबद्ध	100	100	100
2000-01	***	***	(-) ***
सूचीबद्ध	121.26	95.30	-45.62
2001-02	***	***	(-) ***
सूचीबद्ध	115.22	91.28	-45.49
2002-03	***	***	(-) ***
सूचीबद्ध	108.58	109.36	-110.85

प्राधिकारी ने पाया कि संबद्ध वस्तु की बिक्री दर प्रति इकाई हानियों में पूर्ववर्ती वर्षों की तुलना में जांच अवधि के दौरान महत्वपूर्ण रूप से वृद्धि हुई है। चूंकि कंपनी को हानि हो रही है इसलिए निवेश पर प्राप्ति नकारात्मक है।

37. नकदी प्रवाह पर वास्तविक और संभावित नकारात्मक प्रभाव

प्राधिकारी ने नोट किया है कि कंपनी दूसरे उत्पादों का भी उत्पादन करती है। अन्य उत्पादों के बारे में कंपनी का नकदी प्रवाह सकारात्मक रहा है किन्तु संबद्ध वस्तु के उत्पादन और बिक्री के संबंध में नकदी प्रवाह प्रतिकूल रहा है। प्राधिकारी ने पाया कि घरेलू उद्योग को संबद्ध वस्तु की बिक्री में जांच अवधि के दौरान नकदी हानि हुई है, जिसने कंपनी की नकदी प्रवाह स्थिति पर समग्र रूप से दबाव डाला है।

संबद्ध वस्तु के संबंध में नकदी प्रवाह के आंकड़े निम्नानुसार (सूचीबद्ध) पाए गए हैं

1999-2000	2000-01	2001-02	जांच अवधि
-100	-55.5	-65.61	-104.95

38. वृद्धि

प्राधिकारी ने यह पाया कि घाटों के कारण घरेलू उद्योग के लिए नए निवेश करना व्यवहार्य नहीं होगा। उत्पादन तथा संबद्ध वस्तुओं की बिक्री जैसे कारकों में जांच अवधि के दौरान वृद्धि में नकारात्मक वृद्धि प्रदर्शित हुई थी।

		1999-2000	2000-01	2001-02	जांच अवधि
कारोबार में वृद्धि दर (%)	सूचीबद्ध	-	61.00	10.10	-41.21
बिक्री मात्रा में वृद्धि दर (%)	सूचीबद्ध	-	32.77	15.88	-37.62

39. उत्पादकता

उत्पादकता निम्नानुसार रही है:

	1999-2000	2000-01	2001-02	जांच अवधि
उत्पादन मी. टन/कर्मचारी	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	128.92	128.81	79.04

प्राधिकारी ने यह पाया कि जांच अवधि के दौरान उत्पादकता में काफी गिरावट आई है। इसका मुख्य कारण जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के उत्पादन में गिरावट है।

40. क्षति संबंधी निष्कर्ष

प्राधिकारी नोट करते हैं कि उत्पादन, क्षमता उपयोग, बिक्री, लाभप्रदता तथा उत्पादकता जैसे कारक वर्ष 1999-2000 तथा जांच अवधि के पूर्ववर्ती वर्षों की तुलना में जांच अवधि के दौरान नकारात्मक प्रवृत्ति प्रदर्शित करते हैं। तथापि, तैयार मालों की भण्डार सूची में गिरावट की प्रवृत्ति देखी गयी है। मांग में घरेलू उद्योग के हिस्से में वर्ष 1999-2000 के दौरान 85.37 प्रतिशत की तुलना में जांच अवधि के दौरान 55.44 प्रतिशत तक की गिरावट आई। कुल मांग में संबद्ध देशों से पाटित आयातों का हिस्सा पूर्ववर्ती वर्षों के दौरान रहे शून्य की तुलना में जांच अवधि के दौरान 21.76 प्रतिशत रहा है। घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में इस घाटे का कारण मुख्यतः संबद्ध देशों से पाटित आयात हैं।

पाटित आयातों का कीमत प्रभाव पाटित आयातों के परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग द्वारा वहन की गयी कीमत कटौती से सुस्पष्ट है। कीमत न्यूनीकरण भी हुआ है। उद्योग को कम कीमत पर बिक्री का भी सामना करना पड़ा है क्योंकि पाटित आयातों के पहुँच मूल्य घरेलू उद्योग की क्षति रहित कीमत से काफी कम है। उद्योग को संबद्ध वस्तुओं की बिक्री में नकद घाटा भी हुआ है। निवेश पर आय नकारात्मक रहना जारी है। उपर्युक्त मापदण्ड दर्शाते हैं कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है।

41. कारणात्मक संबंध

तर्क दिए गए हैं कि संबद्ध वस्तु की मांग में वृद्धि हो रही है और ऐसी स्थिति में आयातों में वृद्धि

अनिवार्य है। यह भी तर्क दिया गया है कि याचिकाकर्ता ने अपनी उत्पादन क्षमता में वृद्धि नहीं की है और उनके उत्पाद की गुणवत्ता अच्छी नहीं है। पाटनरोधी शुल्क द्वारा सुरक्षा से संभवतः घरेलू उद्योग को भारतीय बाजार में एकल स्वामित्व की स्थिति प्राप्त हो जाएगी।

प्राधिकारी ने कारणात्मक संबंध के बारे में याचिकाकर्ता और अन्य हितबद्ध पक्षकारों के द्वारा व्यक्त किए गए मतों पर विचार किया है। प्राधिकारी ने पाया कि थर्मल सेंसेटिव पेपर के विनिर्माण के लिए घरेलू उद्योग द्वारा अपनाई गई प्रौद्योगिकी निर्यातक द्वारा अपनाई गई प्रौद्योगिकी के साथ तुलनीय है। इंडोनेशिया के एकमात्र सहयोगी निर्यातक के आंकड़ों के सत्यापन के आधार पर प्राधिकारी ने पाया था कि निर्यात पाटित कीमतों पर हुए हैं। प्राधिकारी ने यह भी नोट किया कि घरेलू उत्पादक को विभिन्न देशों में स्थित उत्पादकों से प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ा है। जांच के साक्ष्य से यह संकेत मिलता है कि घरेलू उद्योग द्वारा प्राप्त की गयी बिक्री कीमतों पर आयातित संबद्ध वस्तु की कीमतों का बहुत अधिक प्रभाव पड़ा है। प्राधिकारी ने पाया कि संबद्ध वस्तु की मांग में वृद्धि हो रही है हालांकि जांच अवधि के दौरान आकलित मांग में थोड़ी गिरावट का संकेत मिला। घरेलू उद्योग द्वारा समकालीन प्रौद्योगिकी का प्रयोग किया जा रहा है और इसलिए इन कारकों को क्षति का कारण नहीं माना जा सकता है। ई. यू. जापान और चीन से संबद्ध वस्तु के आयातों पर पहले ही पाटनरोधी शुल्क लागू है और इसलिए इन देशों से आयात क्षति का कारण नहीं हो सकते हैं। कोई ऐसा अन्य कारक जो क्षति का कारण हो सकता है, प्राधिकारी की जानकारी में नहीं आया है। प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के पाटित आयातों के परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है।

ड. कीमत वचनबद्धता

42. प्रकटन विवरण के उत्तर में मै0 पिंडो डेली ने करार के अनुच्छेद 8 के अनुसार पाटन एवं क्षति के प्रारंभिक सकारात्मक निर्धारण की स्थिति में कीमत वचनबद्धता का प्रस्ताव दिया। कीमत वचनबद्धता का प्रस्ताव उस कीमत स्तर तक के लिए था जिसे प्राधिकारी द्वारा पाटन के क्षतिकारक प्रभाव को समाप्त करने के लिए पर्याप्त माना गया।

43. प्राधिकारी ने नोट किया कि इस मामले में मै0 पिण्डो डेली के सम्बन्ध में सामान्य मूल्य का निर्धारण उत्पादन लागत जमा लाभ की उचित राशि के आधार पर किया गया है। नियम 15(6) के अनुसार जहाँ निर्दिष्ट प्राधिकारी ने उप-नियम (1) के अंतर्गत कोई वचन पत्र स्वीकार किया है, वहाँ उसे उस निर्यातक से उक्त वचन पत्र की पूर्ति के लिए संगत सूचना समय-समय पर उपलब्ध करने और संगत आंकड़ों के सत्यापन की अनुमति देने की अपेक्षा करता है जिससे ऐसा वचन पत्र स्वीकार किया गया है। चूँकि इस मामले में सामान्य मूल्य का निर्धारण उत्पादन लागत जमा लाभ के आधार पर किया गया था और न कि घरेलू बिक्री के आधार पर, इसलिए प्राधिकारी ने उत्पादन लागत का सत्यापन अव्यावहारिक पाया था क्योंकि हर बार सामान्य मूल्य और सहमत निर्यात कीमत में उर्ध्वगामी संशोधन के लिए परिवर्तन अपेक्षित रहा होगा। मामले की परिस्थितियों को देखते हुए प्राधिकारी ने यह पाया कि कीमत वचन पत्र को स्वीकार करना कठिन हो सकता है क्योंकि निर्यातक की उत्पादन लागत का बार-बार सत्यापन करना अव्यावहारिक होगा। प्राधिकारी ने कीमत वचन पत्र के प्रस्ताव को स्वीकार न करने के कारणों के बारे में निर्यातक को सूचना दी थी और निर्यातक की टिप्पणियों पर विचार भी किया था। टिप्पणियों पर विचार करने के बाद निर्दिष्ट प्राधिकारी ने यह माना कि इस मामले में नियम 15(3) के अनुसार ऊपर उल्लिखित कारणों की वजह से प्रस्तावित कीमत वचन पत्र को स्वीकार करना अव्यावहारिक है।

च. भारतीय उद्योग का हित

44. पाटनरोधी शुल्क लगाने का उद्देश्य सामान्य तौर पर ऐसे पाटन को समाप्त करना है जिससे भारतीय उद्योग को क्षति हो रही है तथा भारतीय बाजार में ऐसी खुली और उचित प्रतिस्पर्धा की पुनःस्थिति लाना है, जोकि देश के सामान्य हित में है।
45. प्राधिकारी मानते हैं कि पाटनरोधी शुल्क लगाने से संबद्ध वस्तुओं के कीमत स्तरों पर प्रभाव पड़ सकता है और परिणामस्वरूप इन उत्पादों की तुलनात्मक प्रतिस्पर्धात्मकता पर प्रभाव पड़ सकता है। किन्तु, पाटनरोधी उपायों से भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्धा कम नहीं हागी। इसके विपरीत, पाटनरोधी उपायों को लागू करने से पाटन द्वारा प्राप्त हुए अनुचित लाभ समाप्त होंगे, भारतीय उद्योग का ह्रास रुकेगा और उपभोक्ताओं के लिए व्यापक विकल्प उपलब्ध रखने में मदद मिलेगी। घाटा उठा रहे उद्योग पर इस प्रभाव को कम से कम करने के उद्देश्य से प्राधिकारी ने पाटनरोधी शुल्क की सिफारिश करना उचित समझा है जो पाटन और क्षति मार्जिन के निचले स्तर पर आधारित होगा। प्राधिकारीयह नोट करते हैं कि पाटनरोधी उपायों को लागू करने से संबद्ध देशों से आयात किसी भी प्रकार कम नहीं होंगे और इस प्रकार उपभोक्ताओं के लिए उत्पाद की उपलब्धता पर कोई असर नहीं पड़ेगा।

छ. निष्कर्ष

46. पूर्वोक्त पर विचार करने के पश्चात, प्राधिकारी इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि:
- (i) संबद्ध देशों से थर्मल सेंसिटिव पेपर का भारत को निर्यात इसके सामान्य मूल्य से कम पर किया गया है;
 - (ii) घरेलू उद्योग ने वास्तविक क्षति उठाई है;
 - (iii) वास्तविक क्षति संबद्ध देशों से पाटित आयातों के कारण हुई है;
47. संबद्ध वस्तुओं के आयातों पर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाना आवश्यक समझा गया है। तदनुसार, प्राधिकारी थर्मल सेंसिटिव पेपर के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लगाने की अनुशंसा करते हैं।
48. पाटन मार्जिन के बराबर या इससे कम पाटनरोधी शुल्क लगाने का निर्णय किया गया है जिसे यदि लगाया जाता है तो इससे घरेलू उद्योग को हुई क्षति दूर हो जाएगी। आयातों के पहुंच मूल्य की भी तुलना जांच अवधि के लिए निर्धारित

घरेलू उद्योग की क्षतिरहित कीमत के साथ की गई थी। तदनुसार, यह प्रस्ताव किया जाता है कि संबद्ध देशों के मूल की अथवा वहां से निर्यातित सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम की अनुसूची 1 के शीर्ष 4809.10, 4811.90 और 4816.20 के अन्तर्गत आने वाले थर्मल सेंसिटिव पेपर पर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाया जाए। पाटनरोधी शुल्क निम्नलिखित तालिका के कॉलम सं० 9 में उल्लिखित राशि और अमरीकी डालर/मी.टन में संबद्ध वस्तु के आयातों के पहुंच मूल्य के बीच का अंतर होगा:

क्र.सं.	उपशीर्ष	माल का विवरण	निर्देशन	उत्पन्न देश	निर्यातक देश	उत्पादक	निर्यातक	राशि	माप का यूनिट	मुद्रा
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
1	4809.10 4811.90 4816.20	थर्मल सेंसिटिव पेपर	सभी प्रकार	इंडोनेशिया	कोई देश	कोई उत्पादक	कोई निर्यातक	मी.टन	1730.15	अम.डा.
2	4809.10 4811.90 4816.20	थर्मल सेंसिटिव पेपर	सभी प्रकार	कोई देश	इंडोनेशिया	कोई उत्पादक	कोई निर्यातक	मी.टन	1730.15	अम.डा.
3	4809.10 4811.90 4816.20	थर्मल सेंसिटिव पेपर	सभी प्रकार	मलेशिया	कोई देश	कोई उत्पादक	कोई निर्यातक	मी.टन	2626.82	अम.डा.
4	4809.10 4811.90 4816.20	थर्मल सेंसिटिव पेपर	सभी प्रकार	कोई देश	मलेशिया	कोई उत्पादक	कोई निर्यातक	मी.टन	2626.82	अम.डा.
5	4809.10 4811.90 4816.20	थर्मल सेंसिटिव पेपर	सभी प्रकार	यूएई	कोई देश	कोई उत्पादक	कोई निर्यातक	मी.टन	2626.82	अम.डा.
6	4809.10 4811.90 4816.20	थर्मल सेंसिटिव पेपर	सभी प्रकार	कोई देश	यूएई	कोई उत्पादक	कोई निर्यातक	मी.टन	2626.82	अम.डा.

49. इस प्रयोजनार्थ आयातों का पहुंच मूल्य सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम 1975 की धारा 3, 3क, 8ख, 9 और 9क के तहत लगाए गए शुल्कों को छोड़कर सभी प्रकार के शुल्कों सहित सीमाशुल्क अधिनियम के अधीन सीमा शुल्क द्वारा यथा निर्धारणीय मूल्य होगा।

50. इस आदेश के विरुद्ध कोई अपील सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के अनुसार सीमाशुल्क, उत्पाद शुल्क एवं सेवाकर अपीलीय न्यायाधिकरण के समक्ष दायर की जा सकेगी।

क्रिस्टी एल. फेर्नान्डेज, निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY
(Department of Commerce)
(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)

NOTIFICATION
FINAL FINDINGS

New Delhi, the 27th January, 2005

Subject : Anti-Dumping Investigation concerning import of Thermal Sensitive Paper from Indonesia, Malaysia and UAE—Final findings

No. 14/2/2003-DGAD.—Having regard to the Customs Tariff Act, 1975 as amended in 1995 and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, thereof:

A. PROCEDURE:

2. The procedure described below has been followed with regard to the investigations:-

- i) The Designated Authority (hereinafter referred to as the Authority), under the above Rules, received a written application from M/s Shree Krishna Paper Mills & Industries Limited, New Delhi alleging dumping of Thermal Sensitive Paper (hereinafter referred to as subject goods) originating in and exported from Indonesia, Malaysia and UAE (hereinafter referred to as subject countries);
- ii) Preliminary scrutiny of the application revealed certain deficiencies, which were rectified by the applicant;
- iii) The Authority notified the Embassies/High Commission of the subject countries in India about the receipt of dumping application made by the petitioner before proceeding to initiate the investigation in accordance with sub-rule (5) of Rule 5 supra;
- iv) The Authority issued a Public Notice dated 29th July, 2003 published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating anti dumping proceedings concerning imports of Thermal Sensitive Paper covered under heading/subheading 4809.10, 4811 and 4816 of Schedule I of the Customs Tariff Act;
- v) The Authority forwarded copy of the said public notice to the known exporters, importers and to the complainants and gave them an opportunity to make their views known in writing;

- vi) According to sub-rule (3) of Rule 6 supra, the Authority provided a copy of the application to the following known exporters and Embassies of subject countries in India:
1. Asia Pulp & Paper Co. Ltd.,
Pt. Pabrik Kertas Tjiwi Kimia Tbk And
Pt Indah Kiat Pulp And Paper Corp Tbk
C/O. Pt. Pindo Deli Pulp And Paper Mills
Jl. Prof. Dr. Ir. H. Soetami No.88,
Teluk Jambe Karawang, Jawa Barat,
Indonesia
 2. Pt. Pindo Deli Pulp And Paper Mills
Jl. Prof. Dr. Ir. H. Soetami No.88,
Teluk Jambe Karawang, Jawa Barat,
Indonesia
 3. Andrew's & Mitchell Agencies
Block 774, Pasir Ris St. 71,
03-392, Singapore 510774
 4. Metropolis Paper Industries
Po Box – 27584
Dubai,
United Arab Emirates
 5. Universal Enterprises (Overseas) Ltd.
P.O. Box No : 5886,
Sharjah,
United Arab Emirates
- vii) Request was made to the Central Board of Excise and Customs (CBEC) and Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S) to arrange details of imports of subject goods:
- viii) The Embassies/High Commission of the subject countries were informed about the initiation of the investigation in accordance with Rule 6(2) with a request to advise the exporters/producers from their country to respond to the questionnaire within the prescribed time. A copy of the letter, petition and questionnaire sent to the exporters was also sent to them:
- ix) A questionnaire was sent to the following known importers of subject goods in India calling for necessary information in accordance with Rule 6(4):

Syndicate Printers
B-4, Sector III
NOIDA – 201 301.

Gopson Papers Ltd.
A-28, Sector – 9
NOIDA (UP).

Lucky Forms (P) Ltd.
16, Samrat Compound
L.B.S. Marg
Vikhroli (W)
Mumbai – 400 079.

Rational Business Corporation
Century House
Near Satyawati College,
Ashok Vihar,
Delhi – 110 052.

Vijex Office Equipment (P) Ltd.
Kamala Arcade,
Anna Salai
Mount Road,
Chennai – 600 006.

Excel Mark Trading Co.
22 (Old No.43)
Subbarayani Street,
Nammal Worpet
Chennai.

Sanjay International
No.1, 80 Ft. Road,
Satya Garden, Saligramam
Chennai – 600 093.

Kalra Papers (P) Ltd.
34, Raja Garden,
New Delhi – 110 015.

Sumat Pershad & Sons
355, Chawri Bazar,
Delhi – 110 006.

Delhi Trading House
1/11423, Main Road,
Subhash Park,
Naveen Shahdara
Delhi – 110 032

Kosmo Paper Stores
C-4, Dhanraj Industrial Estate,
Lower Parel
Mumbai – 400 013.

Hero Paper Co. (P) Ltd.
6/A, Shah Nahar Industrial Estate,
Lower Parel
Mumbai – 400 013.

Kuber Enterprises
535, Katra Ishwar Bhawan,
Khari Baoli,
Delhi – 110 006.

- x) The Authority provided an opportunity to the interested parties to present their views orally in a public hearing held on 21st May, 2004. All parties presenting views were requested to file written submissions of their views expressed. The parties were advised to collect copies of the views expressed by the opposing parties and offer rebuttals, if any;
- xi) The Authority made available to all interested parties the public file containing non-confidential version of evidence submitted by various interested parties for inspection, upon request as per Rule 6(7);
- xii) In accordance with Rule 16 of the Rules supra, the essential facts/basis considered for these findings were disclosed to known interested parties on 23rd December, 2004 vide a disclosure statement and comments received on the same have also been duly considered in these findings;

- xiii) Arguments made by the interested parties after initiation of the investigation, subsequent to the public hearing have been appropriately dealt in the disclosure statement. Arguments dealt with in the Disclosure Statement as well as those made in response to the disclosures have been dealt with in these findings;
- xiv) Cost investigations including spot verification (as deemed necessary) of the domestic industry were also conducted to work out optimum cost of production and cost to make and sell the subject goods in India on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) and the information furnished by the domestic industry;
- xv) The Authority conducted on the spot verification of information furnished by the exporter M/s PT. Pindo Deli Pulp And Paper Mills, Indonesia;
- xvi) *** in this notification represents information furnished by the interested parties on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules;
- xvii) The investigation covered the period from 1st April, 2002 to 31st March, 2003 (POI). The injury analysis covered the three preceding years 1999-2000, 2000-2001, 2001-2002 and the POI.
- xviii) Copies of the Initiation Notice were also sent to FICCI, CII, ASSOCHAM etc. for wider circulation.

B. VIEWS OF PETITIONERS, EXPORTERS, IMPORTERS AND OTHER INTERESTED PARTIES AND EXAMINATION BY AUTHORITY.

3. The views expressed by various interested parties have been discussed in the disclosure statement and also in these findings. The views which have not been discussed earlier in the disclosure statement and those now raised in response to the disclosure statement are discussed in the relevant paragraphs herein below to the extent these are relevant as per rules and have a bearing upon the case. The arguments raised by the interested parties have been examined, considered and, wherever appropriate, dealt in the relevant paragraphs herein below.

4. After the initiation of the investigation, response had been received from the following:

Exporter: -

M/s PT Pindo Deli Pulp And Paper Mills, Indonesia

Importer:

M/s Sumat Pershad & Sons, Delhi

5. Product under Consideration :

The product under consideration is Thermal Sensitive Paper (TSP). Thermal Sensitive Paper is a paper coated with a special mix of chemicals for providing thermal sensitive properties to the base paper. Impression on the paper is created by virtue of controlled thermal heat exposed on the paper. Thermal Sensitive Paper is primarily used for recording messages for electronic equipments where the machine is used to record messages, reports through sensitivity of heat rays. Thermal Sensitive Paper is primarily used in fax machines. It is also used in ECG Machines and other medical equipments. Seismographic machines, Airlines baggage tagging, tickets, boarding cards etc. Petitioners had claimed that TSP is classified under chapter 48 of the Customs Tariff Act. The product does not have a dedicated Customs Classification. However, it generally gets covered under sub-heading 4809.10 i.e. 'Carbon or similar copying paper'. Petitioners had also claimed that TSP is also cleared under different sub-headings of heading 4811 and 4816 of the Customs Tariff Classification. These Classifications are indicative only and are in no way binding on the scope of the present investigation. It had been argued by the exporter M/s Pindo Deli that the petitioner had indicated a market for the product under consideration as 2000 MT during 2002-03 whereas according to them the market was approx. 9000-10000 MT and that much of the requirement of the local market is for product, which the petitioner cannot produce and the Designated Authority may closely examine the definition of goods under consideration. The authority has considered the arguments and has found that the demand of TSP is to be based on the imports made of TSP and domestic sales. Based on the available import data and the domestic sales of the producers in India, the authority has assessed the demand as around 1838 Mt during the POI. The Authority holds that the scope of the product is correctly described as Thermal Sensitive Paper.

6. Like Article :

The petitioner had claimed that there is no difference between the product manufactured by them and the imported product. They had also stated that the subject product manufactured in India by the petitioner is commercially and technically substitutable to the imported product. There are no arguments to oppose this claim. The Authority found that the domestic industry produces Thermal Sensitive Paper. Based on the information received from the exporter and the importer, the Authority is of the view that the product being manufactured by the domestic industry is a commercial substitute of the product under consideration and is comparable in terms of characteristics such as physical and chemical characteristics, functions and uses, distribution and marketing and tariff classification. The Authority, therefore, holds the product manufactured by the domestic industry as like article to the subject goods being imported from subject countries.

7. Domestic Industry :

M/s Shree Krishna Paper Mills & Industries Limited, New Delhi had filed the present application for anti dumping investigation. The petitioner had claimed at the time of making the application that it is the only producer of the subject goods in India and therefore, satisfied the criteria of standing to file the petition on behalf of the domestic industry in terms of Rule 5(3)(a) of the Rules supra. Subsequent to the holding of public hearing on 21.5.2004, issue was raised by the exporter from Indonesia M/s Pindo Deli and importer, M/s Sumat Prasad & Sons that M/s Shree Krishna Paper Mills & Industry is not the only producer and that there is another domestic producer who produces Thermal Sensitive Paper. M/s PT. Pindo Deli Pulp and Paper Mills (SINAR MAS Group) Indonesia, argued that domestic producer M/s Shree Krishna Paper Mills & Industries Ltd. had made incorrect statement at the time of filing the application on 1.1.2003 that it was the sole Indian producer of Thermal Sensitive Paper. As per the information made available subsequent to the public hearing and as per petitioner's statement M/s Alpha Carbonless Paper is the other producer producing Thermal Sensitive Paper during the year 2002-03. The exporter has contended that the initiation of investigation by Designated Authority on this incorrect information is in violation of Article 5.4 of the Agreement. It has been further alleged by the exporter that requirement of Article 5.2 was not met as petitioner failed to provide evidence substantiating its assertion that injury as interpreted by the agreement was caused to the domestic industry producing like product. Further, it has been alleged that the Designated Authority failed to meet the obligation as per Article 5.3 to examine the accuracy and adequacy of evidence provided in the application to determine whether there is sufficient evidence to justify initiation of investigation. The exporter has also argued that the domestic industry should also include M/s Alpha Carbonless Paper.

The exporter has also contended that initiation of this investigation being violative of the Anti Dumping Agreement, it must be promptly terminated. Further it has been stated that the said violations are not vindicated by any post-facto findings.

The Authority has examined these arguments and found that this is the third anti dumping investigation concerning imports of Thermal Sensitive Paper. M/s Shree Krishna Paper Mills & Industries Ltd. had represented the domestic industry as the sole producer in the earlier investigations. The domestic industry had made a statement in the present application that they are the sole producer of Thermal Sensitive Paper in the country. The application in this investigation was received on 1 January, 2003 whereas M/s Alpha Carbonless Paper, the other producer had reported production of 345.05 MT of Thermal Sensitive Paper during the year 2002-03. Therefore, the allegation of the exporter that the petitioner M/s Shree Krishna made a false statement at the time of filing of application on 1.1.2003 is not correct because the financial year 2002-03 closes on 31 March, 2003. The petitioner has also produced documents subsequent to the public

hearing that M/s Alpha Carbonless Paper, Mumbai has been procuring jumbo rolls of Thermal Sensitive Paper from several sources (including the petitioner) and supplied finished rolls in the market. The Annual Report of the company (M/s Alpha) for the year 2002-03 had been finalized on 5th June, 2003. This report contained the information regarding their production of Thermal Sensitive Paper during the year 2002-03. The Authority notes that the obligation of the petitioner under Article 5.2 regarding submission of information is as regards information as is reasonably available to the applicant. Article 5.2(i) also states that where a written application is made on behalf of the domestic industry, the application shall identify the industry on behalf of which the application is made by a list of all known domestic producers of the like product and to the extent possible, a description of the volume and value of domestic production of the like product accounted for by such producers. M/s Alpha Carbonless Paper is a private limited company and their annual report is generally not available in public domain. In these circumstances, the petitioner could not reasonably be expected to have the information about the production of M/s Alpha Carbonless Paper during 2002-03 at the time of filing of application on 1.1.2003. The Authority had examined the accuracy and adequacy of the evidence provided in the application as was reasonably available at that time. In the views of the Authority, there was no violation of Article 5.2 and 5.3 of the agreement. The Authority did not find the allegation of the exporter in this regard sustainable and did not consider the demand for termination of investigation as reasonable. M/s Alpha Carbonless was advised to inform their production figures and their willingness to participate in this investigation. The company informed that they are actually involved in production of Carbonless Paper. However, they had started production of Thermal Sensitive Paper as they were facing stiff competition from imports in Carbonless Paper. They confirmed about their production of Thermal Sensitive Paper during 2002-03 as 345.05 MT and Nil production during the years 2000-01 and 2001-02. They were, however, not willing to participate in this investigation, as their production was too insignificant. However, they have stated that they are not able to recover their cost and make profit from production and sale of Thermal Sensitive Paper. The Authority found that the petitioner M/s Shree Krishna had requisite standing to file the petition as per Rule 5 (3). They also constituted the domestic industry within the meaning of Rule 2 (b) as their production constitutes a major proportion of Thermal Sensitive Paper. The position of the domestic production in the year 2002-03 was as under :

M/s Shree Krishna Paper Mills	-	995 MT
M/s Alpha Carbonless Paper	-	345 MT
Total	-	1340 MT

Share of M/s Shree Krishna - 74%

Considering the foregoing, the Authority is of the view that there is no violation of clause 5.4 of the Agreement in the initiation of this investigation. The Authority holds that M/s Shree Krishna Paper Mills & Industries Ltd. who accounts for a

major proportion of the domestic production of the subject product represents the 'Domestic Industry' within the meaning of Rule 2(b) supra.

8. Inadequate non-confidential information:

It has been argued by the domestic industry that the exporter has resorted to excessive use of confidentiality provision. No indexed information has been provided by the exporter in respect of various appendices forming part of the response. Under Rule 7, the Authority has to be satisfied as to the confidentiality of the material. Even if the material is confidential, the party providing information on confidential basis has to furnish a non-confidential summary thereof. The Authority had taken note of the arguments of the domestic industry during the course of the investigation. The exporter had provided non-confidential version of the questionnaire response. They had further provided more information on non-confidential basis on 19th March, 2004, 15th July, 2004, 28th September, 2004, 8th November, 2004 and 4th January, 2005. The domestic industry inspected the public file from time to time and was allowed to take copies of the submissions made by other interested parties. The financial statements of the exporter (annual report) were made available to the domestic industry. The exporter provided summary of factory cost and manufacturing cost, adjustment on account of inland freight, packing cost, raw material details, reasons for non-submission of details of exports to other countries, etc. The information regarding actual exports to India, detailed cost of production is considered to be by nature confidential. The Authority found that the exporter had provided sufficient non-confidential summary of information/arguments made on confidential basis and these had been provided to the domestic industry from time to time to enable them to offer their comments. The Authority does not find the argument of the domestic industry sustainable on this ground in accordance with Rule 7.

C. EXAMINATION OF CLAIMS REGARDING NORMAL VALUE, EXPORT PRICE AND DUMPING MARGIN.

9. Normal Value for Indonesia:

(a) Copy of Initiation Notice was sent to the Embassies/High Commission of subject countries, the exporters, importers and domestic industry. In response to the initiation notification M/s PT Pindo Deli Pulp & Paper Mills, Indonesia (Pindo Deli) had furnished response to the exporter questionnaire. The Authority conducted on-the-spot verification of information furnished by Pindo Deli at their plant and office in Indonesia. The information furnished by Pindo Deli in respect of their exports, domestic sales, cost of production etc. was verified. A copy of the verification report was sent to M/s Pindo Deli. Comments received on the verification report and in response to the Disclosure Statement have been considered and dealt with in these findings.

(b) In response to the Disclosure Statement, the domestic industry has made following arguments:

- (i) The dumping margin determined for Indonesian exporter is grossly inadequate to provide adequate relief to the domestic industry.
- (ii) The cost of production of the exporter has not been correctly determined by the Designated Authority. Cost of production of the exporter cannot be considered without including interest and depreciation cost. As the exporter has not provided profit and loss statement for the POI, cost of production could not have been determined based on the information furnished by the exporter.
- (iii) The exporter has its own raw material of base paper. It is not clear whether the transfer price of base paper represents true and representative fair market value. Transfer price should be based on arm's length.
- (iv) Exporter has been incurring huge financial losses. The precarious financial situation of the exporter is due to indiscriminate dumping practices.
- (v) The selling price of cut sheets of Thermal Sensitive Paper sold by exporter in home market should be compared with the exports to India after making adjustment of cutting cost. The exporter has provided information only in respect of selected types of paper and complete information on all types of thermal paper has not been provided.
- (vi) The exporter has not given information regarding sales of subject goods to other countries. The exporter did not quantify the difference in costs between the subject product exported to India and those sold in home market and third countries. This should be a sufficient ground to declare them as non-cooperative and Rule 6(8) should be applied.
- (vii) Financial expenses have not been considered as per records maintained by the company. The reference to currency crisis for computing financial expenses is without relevance.
- (viii) The determination of SGA and profit is not consistent with the rules. The amount for administrative, selling and general costs and for profits should be based on actual data pertaining to production and sales in the ordinary course of trade of the like product by the exporter. Only when such amounts cannot be determined on this basis, the amounts may be determined on the basis of alternatives given under Article 2.2.2. Authority should have considered profit in respect of exports to third countries.

(c) In response to the Disclosures, the exporter, M/s PT Pindo Deli has given arguments that Authority's treatment of depreciation cost in the normal value construction is not in accordance with Article 2.2.1.1. The Authority has imputed a notional amount of depreciation which is far in excess of the amount based on Pindo Deli's actual depreciation cost for the product category within which the subject merchandise falls, allocated in accordance with the method historically utilized.

(d) The Authority has examined the arguments of the domestic industry and the exporter on the normal value determination. As regards the exporter's arguments regarding treatment of depreciation cost, the calculation for depreciation cost by the Authority is based on the relative capacity of production of Thermal Sensitive Paper and Carbonless Paper. As per company's financial statement, the Thermal Sensitive Paper production and sales are reported under the overall product category of Carbonless Paper Division. There are no separate reports regarding the performance of Thermal Sensitive Paper production and sales as a product category. The allocation has been made specifically for this investigation relating to Thermal Sensitive Paper, which has a different rate of production. The allocation of depreciation cost to Thermal Sensitive Paper production by the Authority is on the basis of relative capacity of production of Thermal Sensitive Paper vis-à-vis Carbonless Paper produced in the same division. There is no evidence of historical allocation of depreciation cost for thermal paper in the company's financial statements to support the claim for allocation of depreciation costs. In the views of the Authority, the methodology adopted for calculation of depreciation for Thermal Sensitive Paper reflects the cost that can reasonably be associated with the production and sale of the product under consideration i.e. Thermal Sensitive Paper as is required under Article 2.2.1.1.

(e) As regards the arguments made by the domestic industry regarding the financial data submitted by the exporter, the Authority had conducted verification of cost of production data furnished by the exporter which was verified with reference to the basic records of the company and the financial statements for the POI provided by the company. As regards, determination of normal value on the basis of home market sales of the company of register rolls, as has been stated in the Disclosures, the company had domestic sales of ***MT of US\$ *** made by P.T. Cakrawala Mega Indah to an independent buyer. These sales are of Thermal Sensitive Paper in register rolls. As this was one single transaction of less than 5% of exports to India (*** MT), these were not considered sufficient for determination of normal value based on domestic market sales in accordance with footnote 2 of Article 2.2.

(f) As regards price of raw material of base paper, which is produced captively by the exporter, the Authority did not find any independent sales made

by the company for base paper. Moreover, the facts of the case did not warrant to disregard the price of base paper taken by the company for calculation of cost of production.

(g) As regards determination of normal value based on exports to third countries, as per the exporter, there were no comparable sales of the product concerned to any market other than India. The thermal paper exported to India is off-spec product, which is of a quality not acceptable to other markets. This specification (quality) difference is a physical/technical characteristic which creates a significant price difference and causes the Thermal Sensitive Paper to India to be not interchangeable with the Thermal Sensitive Paper exported to other markets. Further, the price difference between the off-spec product to India and the standard product to other markets is not cost related and it is not possible to quantify the price effect of this difference. The company had claimed that the goods concerned exported to India are 'B-grade' quality and 'of-specs' whereas those sold in the domestic market and exported to countries other than India are standard quality. Also that the goods sold in the domestic market is Thermal sensitive paper converted into register rolls and those sold to India are Thermal sensitive paper in reels.

(h) As per Article 2.2, where the low volume of sales of like product in the domestic market of the exporting country does not permit a proper comparison, the comparison has to be made with a comparable price of the like product when exported to an appropriate third country, provided that this price is representative or with the cost of production in the country of origin plus a reasonable amount for administrative, selling and general costs and for profits. The exporter had made a strong and consistent argument that their exports to other countries were not comparable with the exports made to India. The comparable price of the like product when exported to an appropriate third country has to be a representative price. The Authority does not agree with the argument of the domestic industry to treat the exporter as non-cooperative and to resort to facts available as per Rule 6(8). The exporter has co-operated in giving information relating to cost of production and had offered for its verification which was also conducted. In the given circumstances, the authority has considered it appropriate to determine the normal value on the basis of cost of production plus a reasonable amount for administrative, selling and general costs and profits as per Section 9A(1)(c)(ii)(b) of the Act.

(i) As regards treatment of financial expenses, as per Article 2.2.1.1 of the Anti Dumping Agreement, for the purpose of paragraph 2, costs shall normally be calculated on the basis of records kept by the exporter or producer under investigation, provided that such records are in accordance with the generally accepted accounting principles of the exporting country and reasonably reflect

the costs associated with the production and sales of the product under consideration.

(j) As reported in its annual report 2002, from 2001 APP and its subsidiaries including the company PT Pindo Deli, declared a standstill with respect to the debt obligations of the APP Group. This standstill declaration essentially amounted to the publication by APP of the inability of APP Group members, including the company, to timely service their respective debt obligations. As per this report, on September 28, 2002, APP and the principal Indonesian operating companies within the APP group (the PIOC's) agreed on preliminary terms with certain material creditors with respect to the principal terms of a financial restructuring. As reported in annual report 2003, the PIOC's signed individual Master Restructuring Agreements (MRA) with the Indonesian Bank Restructuring Agency (IBRA) and creditors. This restructuring is dependent upon 90% of the creditors accepting the terms of the proposed restructuring. Subsequently, the exporter has provided a confirmation that close to 100% of Pindo Deli's creditors have agreed to join the MRA. The views of the exporter on the allocation of financial expenses based on the MRA have been considered. The authority has also considered the fact that after the currency crisis of 1997, several Indonesian companies had defaulted in loan repayments and these companies had gone for financial restructuring. The Authority held the view that as per the provisions of Article 2.2.1.1 as above, it would be reasonable to consider the financial expenses as per the MRA for the purpose of calculation of cost of production. The Authority does not agree with the views of the domestic industry to treat financial expenses on the basis of expenses charged in the books for the relevant period.

(k) As regards administrative, selling and general costs, these have been based on actual data pertaining to the production and sales of the like product by the exporter. As regards profits to be included in the constructed normal value, the domestic industry's argument is to consider the profits made on exports to third countries. Whereas the exporter has made argument that it may not be appropriate to determine such profit for constructing normal value for comparison with off-spec material exported to India, on the basis of actual profit realized by Pindo Deli in sales of Thermal Sensitive Paper to all markets during the POI. As per the exporter:

- i. Constructed normal value is a proxy domestic price and consequently amounts for profit and SGA expenses must be amounts incurred and realized in domestic sales,
- ii. To take into account profit in export sales could well result in profit in sales at dumping prices being taken into account, and
- iii. The scheme of Article 2.2.2 makes it clear that amounts of SGA incurred and profit realized are to be those incurred and realized in domestic sales.

Further, the exporter has argued that it will be inappropriate to include profit realized in the only domestic sale of Thermal Paper of register rolls as such sale is of insufficient quantity for determination of normal value. The specifics of this case make it even more unreasonable to include in an amount of profit in a constructed normal value for the inferior quality (off-spec) and heavily discounted Thermal Sensitive Paper sales to India, profit realized in the higher priced sales of standard quality thermal paper sales to other export markets. Such profit amount is well in excess of a reasonable profit amount realizable in sales of off-spec product in the domestic market and any other market.

(l) As per Article 2.2.2, for the purpose of paragraph 2, the amounts for administrative, selling and general costs and for profits shall be based on actual data pertaining to production and sales in the ordinary course of trade of the like product by the exporter or producer under investigation. When such amounts cannot be determined on this basis, the amounts may be determined on the basis of :

- (i) the actual amounts incurred and realized by the exporter or producer in question in respect of production and sales in the domestic market of the country of origin of the same general category of products ;
- (ii) the weighed average of the actual amount incurred and realized by other exporters or producers subject to investigation in respect of production and sales of the like product in the domestic market of the country or origin;
- (iii) any other reasonable method, provided that the amount for profit so established shall not exceed the profit normally realized by other exporters or producers on sales of products of the same general category in the domestic market of the country of origin.

(m) The Authority has considered these arguments and has also examined the data of the company as regards profits in respect of following:

- (i) On total sales of thermal paper- this includes small domestic sales of register rolls, exports to India and exports to third countries.
- (ii) On the basis of small domestic sales of register rolls.
- (iii) On the sales of carbonless paper (NCR) – same general category of products.

(n) After considering the data on profit level reasonably to be attributed for constructing the normal value, the authority held that it would be reasonable to add profits earned by the company in domestic sales of same general category

of products i.e. carbonless paper. Accordingly, a profit margin of *** % was added to the cost of production and normal value was arrived at US\$ *** PMT.

10. Export Price for Indonesia:

During the POI, the company made exports of Thermal Sensitive Paper of *** MT to India at a gross value of US\$ ***. The domestic industry has argued that no adjustment for commission paid by the exporter has been made. As per the information, no discount was paid on these exports. On verification of exporter's information, there was no such indication that commission was paid to any Indian agent or company. The sales were made to different customers, generally paper traders in India and who were non-affiliated to the company. The invoices were verified with reference to the terms of payment, delivery terms, quantity and value. The company had given sales price structure for export sales in Appendix 3A which has been verified with reference to the records of the company. It was verified that the inland freight included shipping, clearance and handling charges also. The net export price at ex-factory level was determined as US\$ *** PMT.

11. Normal Value for Malaysia

None of the exporters / producers from Malaysia had furnished questionnaire response giving information regarding cost of production, domestic sales price, adjustments etc. Without any information relating to normal value determination, the Authority considers the Malaysian producers/exporters as non-cooperative. The Authority finds that in the absence of co-operation from Malaysian exporters, it was justified in resorting to facts available in accordance with Article 6.8 read with Annex II. In the absence of information about domestic sales price of subject goods in Malaysia and evidence about exports to other countries from Malaysia, cost of production of Malaysian producers, the Authority considered it appropriate to determine normal value on the basis of a reasonable estimate of cost of production of subject goods in the country of origin plus a reasonable amount for administrative, selling and general costs and for profits. The applicant had furnished information in this regard in the application. The Authority has considered the cost of major raw material base paper and other chemicals during the POI on the basis of actual data of procurement/imports. International cost of raw material excluding any duties, as per records available in India, has been considered. Other costs viz. utilities, selling, general and administrative expenses etc. have been taken on the basis of verified information of the domestic industry. A reasonable profit margin has been added to arrive at the normal value which is determined as US\$*** PMT.

12. Export Price for Malaysia

None of the exporters from Malaysia have given information regarding export price. The Authority has considered the information furnished by the petitioner regarding export prices which is based on the data obtained from M/s

Informant, Mumbai and M/s Exim Infoline, Chennai. The authority has also considered the import data received from DGCI&S. Based on this information, the export price from Malaysia is US\$ 1229.07. Appropriate adjustments have been made from the average CIF price on account of sea freight, insurance, commission, inland freight and port expenses. The net export price arrived is US\$ *** PMT.

13. Normal Value for UAE

None of the exporters / producers from UAE had furnished questionnaire response giving information regarding cost of production, domestic sales price, adjustments etc. Without any information relating to normal value determination, the Authority considered the UAE producers/exporters as non-cooperative. The Authority finds that in the absence of co-operation from UAE exporters, it was justified in resorting to facts available in accordance with Article 6.8 read with Annex II. In the absence of information about domestic sales price of subject goods in UAE and evidence about exports to other countries from UAE, cost of production of UAE producers, the Authority considers it appropriate to determine normal value on the basis of a reasonable estimate of cost of production of subject goods in the country of origin plus a reasonable amount for administrative, selling and general costs and for profits. The applicant had furnished information in this regard in the application. The Authority has considered the cost of major raw material base paper and other chemicals during the POI on the basis of actual data of procurement/imports. International cost of raw material excluding any duties, as per records available in India, has been considered. Other costs viz. utilities, selling, general and administrative expenses etc. have been taken on the basis of verified information of the domestic industry. A reasonable profit margin has been added to arrive at the normal value which is determined as US\$*** PMT.

14. Export Price for UAE

None of the exporters from UAE have given information regarding export price. The Authority has considered the information furnished by the petitioner regarding export prices which is based on the data obtained from M/s Informant, Mumbai and M/s Exim Infoline, Chennai. The authority has also considered the import data received from DGCI&S. Based on this information, the export price from UAE is US\$ 1388.31. Appropriate adjustments have been made from the average CIF price on account of sea freight, insurance, commission, inland freight and port expenses. The net export price arrived is US\$ *** PMT.

15. Dumping Margin :

The Authority followed the consistent practice of adopting the principles governing the determination of Normal Value, Export Price and Margin of Dumping as laid down in Annexure I to the anti-dumping rules. Dumping margins

have been determined on the basis of a fair comparison of Export Price with the Normal Value in pursuance of the principle laid down in Para 6 of Annexure-1 to the Rules. The comparison is at the same level of trade, i.e. Ex-factory level. Normal Value at ex-factory level has been compared with the export price at ex-factory level of relevant comparable type of Thermal Sensitive Paper. Based on the Normal Value and export price as determined above, the Authority has determined the following dumping margins (%):

	M/s PT Pindo Deli, Indonesia	Malaysia	UAE
Normal Value	***	***	***
Export Price	***	***	***
Dumping Margin	***	***	***
Dumping Margin %	22.82	92.94	70.29

D. INJURY TO THE DOMESTIC INDUSTRY

16. Rule 11 of Anti Dumping Rules reads as follows:
"Determination of Injury:

(i) In the case of imports from specified countries, the designated authority shall record a further finding that import of such article into India causes or threatens material injury to any established industry or materially retards the establishment of any industry in India;

(ii) The designated authority shall determine the injury to domestic industry, threat of injury to domestic industry, material retardation to establishment of domestic industry and a causal link between dumped imports and injury, taking into account all relevant facts, including the volume of dumped imports, their effect on price in the domestic market for like articles and the consequent effect of such imports on domestic producers of such articles and in accordance with the principles set out in Annexure II to these rules."

17. The principles for determination of injury set out in Annexure-II of the Anti-Dumping Rules lay down that:

a. A determination of injury shall involve an objective examination of both (a) the volume of dumped imports and the effect of the dumped imports on prices in the domestic market for like article and (b) the consequent impact of these imports on domestic producers of such products.

b. While examining the volume of dumped imports, the said Authority shall consider whether there has been a significant increase in the dumped imports, either in absolute terms or relative to production or consumption in India. With regard to the effect of the dumped imports on prices as referred to in sub-rule (2)

of Rule 18 the Designated Authority shall consider whether there has been a significant price under-cutting by the dumped imports as compared with the price of like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increase which otherwise would have occurred to a significant degree.

18. Issues raised by the domestic industry :

The domestic industry has furnished information in the application regarding injury in respect of all the parameters. It had claimed that material injury was earlier caused due to the dumped imports from Japan, China and EU. The Designated Authority conducted investigations in respect of these countries and recommended imposition of anti dumping duty. The domestic industry is again suffering material injury now from the dumped imports from Indonesia, Malaysia and UAE. The domestic industry made following claims regarding injury:

Imports :

Imports from subject countries have increased in relation to imports of the product in India. Import from subject countries have increased in relation to the demand of the subject goods in India.

Production, capacity utilization and sales :

Production and capacity utilization has declined in comparison to previous years. Sales volumes have declined significantly in spite of efforts of the domestic industry to sell its products. If the trend of dumped imports from subject countries continues, the domestic industry would lose further sales as in spite of reducing prices, the imports are under cutting the prices of the domestic industry. Increase in imports and its market share has direct impact over potential decline in sales of the domestic industry.

Factors affecting the domestic prices :

The domestic industry is facing severe price undercutting due to dumped imports.

The landed price of imports from subject countries is causing severe price suppression and depression effect.

The landed price of imported material is significantly below the non-injurious price of the domestic industry and is thus resulting in severe price under selling.

Employment - The company is a multi-product company and is struggling with the dumping of the product from various sources. It has to maintain its employees and there are no significant changes in the employment level.

Wages - According to the prevailing laws of the country, the company had to increase wages of its employees.

Profitability - The company's losses have increased and profitability has further deteriorated.

Return on capital employed - The actual return on capital employed remains negative and has further deteriorated.

Productivity - The decline in production of the domestic industry directly resulted into reduction in productivity of the domestic industry. The productivity has declined on the basis of production per day and on the basis of productivity per employee.

Market Share in demand - Detailed methodology for assessment of consumption of Thermal Sensitive Paper in India had been described in the petition. On the basis of the assessed demand, market share of domestic industry in demand has declined significantly. The share of the dumped imports from the subject countries has increased significantly.

Dumping Margin - Dumping margin in respect of dumped imports from subject countries is very significant.

Cash Flow - The company is multi-product company and accordingly to generally accepted accounting principles, does not require maintaining separate cash flow for the said product. Therefore, the cash flow for the company as a whole may not show correct picture of state of affairs of the company.

Growth - Due to dumping of the subject goods, the sales quantity as well as turnover of the product declined in 2002-03. The domestic industry, which had positive growth till 2001-02, had negative growth in POI.

Ability to raise fund / capital investment - The company cannot raise any fund or capital due to continued losses as the company is struggling due to dumping from one after another source.

19. Arguments raised by M/s PT Pindo Deli, Indonesia – Exporter:

It is demonstrated by Pindi Deli's verifiable response that it has not exported the goods under consideration to India at dumped prices. Consequently, any injury experienced by the petitioner cannot be by reason of dumping by Pindo Deli.

20. Arguments made by Sumat Pershad & Sons, Delhi – Importer:

- i. The domestic industry has incorrectly assessed the demand of the subject goods during POI as 2000 MT whereas the demand is about 12600 MT.

- ii. Petitioner claims that they produce all types of thermal paper which is false. The quality of the product made by the petitioner is not good. They have not been able to supply any lottery organizer.
 - iii. In spite of a healthy increase in the demand of Thermal Sensitive Paper in the country, the petitioner never increased the installed capacity of their factory after 1999.
 - iv. Due to huge gap between the installed capacity and the demand in the country, imports is the only measure by which this huge gap can be curtailed. The petitioner is not able to achieve the production as per their installed capacity because they lack the required technology and the raw material for the same.
 - v. For production of quality thermal paper, the manufacturer is required to use the top coated grade of base paper and then treatments are done over it to convert into thermal sensitive paper. Instead the petitioner uses uncoated base paper and converts it into Thermal Sensitive Paper. As a result there are decal problems and they cannot utilize their installed capacity.
21. Domestic Industry gave rebuttals to the various arguments made by the interested parties on the issue of injury.
- i. As regards demand of the subject product, it has been stated that the information provided by the importer M/s Sumat Pershad & Sons pertained to the year 2003-04 which is outside the POI. Even this showed imports of maximum 2059 MT. This could also include imports of products other than thermal paper. On an analysis, the imports of thermal paper can at best be 1850 MT during POI. Adding to this the domestic sales of 1019 MT of the petitioner and 332 MT of M/s Alpha Carbonless, the total demand works out to 3201 MT. The importer had shown the demand as 10200 MT during POI which is contrary to facts and much exaggerated.
 - ii. Meeting of the entire domestic demand of a product is not a pre-condition to seek relief from dumping. Purpose of imposition of anti dumping duty is not to restrict imports. Even after imposition of duty, imports can be made. The domestic industry is seeking imposition of anti dumping duty on unfairly dumped price import. As regards quality, the subject goods produced by the petitioner are at par with the international quality goods. Petitioner has collaboration with M/s Hansol of Korea. The production process for the subject goods involves coating of base paper with speciality chemicals. The base paper used by the petitioner is also a coated paper.

- iii. The petitioner is offering thermal paper in various GSM as is evident from the product brochure.

22. No comments have been received from the importer in response to the Disclosures. M/S Pindo Deli has argued that the Authority has erroneously considered the domestic industry to be just Shree Krishna whereas it includes Alpha. Further, the Authority has incorrectly reported decline in sales and production volume and market share of domestic industry. In fact, the domestic industry's sales and production increased during POI, while its market share was 74.21% and not 55.44% at that time. Regarding profitability, the statement about company's losses having increased and profitability deteriorated is not consistent with Shree Krishna's annual report for 2002-03 which reports a substantial increase in net profit.

23. Cumulative assessment of injury:

As per annexure-II (iii), in cases where imports of a product from more than one country are being simultaneously subjected to Anti-dumping investigation, the Authority is required to cumulatively assess effect of such imports, only when it determines that (a) the margin of dumping established in relation to imports from each country is more than 2% expressed as percentage of export price and the volume of the imports from each country is 3% of the imports of like article --- and (b) cumulative assessment of the effect of imports is appropriate in light of the conditions of competition between the imported article and the like domestic article. The Authority has found that the margin of dumping in respect of each of the subject country is more than 2% and the volume of imports from each country is also more than 3%.

With a view to assess the conditions of competition between imported products and the conditions of competition between the imported products and the like domestic product, the Authority's views are that:

- (i) The subject goods have been imported from the subject countries under the same tariff classification;
- (ii) The Authority has found that the imported subject goods are commercial substitutes of the domestically produced Thermal Sensitive Paper.
- (iii) The information furnished by the importer gives a reasonable indication that the exports made from the different subject countries compete in the same market as these are similar products.
- (iv) Therefore, the Authority found it appropriate to cumulatively assess the effect of imports of the subject goods on the domestically produced like article in the light of conditions of competition between imported

products and the conditions of competition between the imported products and the like domestic product. The Authority found that there is a cumulative effect of injury by imports of subject goods from subject countries on the domestic industry.

24. Examination of Injury by the Authority :

The Authority has examined the arguments on injury and found that M/s Shree Krishna accounts for a major proportion of the domestic production of subject product and the other producer M/s Alpha declined to participate in the investigation. The Authority has considered M/s Shree Krishna as the domestic industry. Therefore, assessment of injury parameters has to be seen on the basis of Shree Krishna's performance, the other producer having not furnished the information. However, for assessment of total demand of the product, the production of M/s Alpha has also been included. As regards profitability, the exporter has referred to the annual report of Shree Krishna for 2002-03 which reports an increase in net profit. M/s Shree Krishna produces coated paper also which is a major product of the company. The profitability of Shree Krishna for this investigation has been analyzed with reference to the subject product i.e. Thermal Sensitive Paper.

The authority has also considered other arguments made by the interested parties as regards the injury claimed to have been suffered by the domestic industry. The Authority also conducted verification of information furnished by the domestic industry. As regards the demand of subject product, the authority found that the import data available indicated different figures. However, the data provided by the importer on a CD pertained to the imports made during the year 2003-04, which is outside the POI. Taking into account the information of the secondary sources, ICD, DGCI&S, exporter's response, the authority found that the imports of subject product were as under :

Qty. in MT				
Country	1999-2000	2000-2001	2001-2002	2002-2003
Indonesia	--	--	--	298
Malaysia	--	--	--	57
UAE	--	--	--	45
Total imports from subject countries	--	--	--	400
Other countries	182	309	233	74
Total imports	182	309	233	474

The information regarding the various injury parameters has been examined and analyzed by the Authority as under :

25. Volume of Imports :

The Authority has taken note of information regarding imports of subject goods as reflected by the official statistics published by the DGCI&S, information furnished in application based on secondary sources, the responses of the exporter and some importers.

Country	1999-2000	2000-2001	2001-2002	2002-2003
Indonesia	--	--	--	298
Malaysia	--	--	--	57
UAE	--	--	--	45
Total imports from subject countries	--	--	--	400
Other countries	182	309	233	74
Total imports	182	309	233	474

The total imports of subject goods as reflected in secondary source data increased from 182 MT in 1999-2000 to 474 MT in 2002-03 (POI). The imports from subject countries were nil during previous years of injury determination period and which became 400 MT during the POI. These imports represented about 84% of total imports. Therefore, there was an increase in imports of subject goods from subject countries in absolute terms.

26. Market share:

The Authority finds that the market share of the domestic industry and the imports from the subject countries in the demand of subject goods has been as under:

	1999-2000	2000-2001	2001-2002	2002-2003
Imports-total	182	309	233	474
Domestic sales of petitioner	1062	1410	1634	1019
Sale of other producers	0	0	0	345
Demand	1244	1719	1867	1838
Imports from subject countries	0	0	0	400
Imports from other countries	182	309	233	74
Share in demand-imports from subject countries (%)	0	0	0	21.76
Share in demand-domestic industry	85.37	82.02	87.52	55.44
Share in demand of other producers	0	0	0	18.77

Share in demand- imports from other countries	14.63	17.98	12.48	4.03
---	-------	-------	-------	------

The Authority finds that the share of imports of subject goods from subject countries was nil during previous years and it is now 21.76% during POI. There is thus an increase in the dumped imports from subject countries in relation to the demand of the product in the country. The share of domestic industry in total demand has gone down from 85.37% in 1999-2000 to 55.44% during the POI.

27. Production and Capacity Utilisation:

The production and capacity utilization of the domestic industry has been as under :

	1999-2000	2000-2001	2001-2002	POI
Capacity	2000	2000	2000	2000
Production	1075	1504	1582	995
Capacity Utilization %	53.75	75.23	79.13	49.77

The Authority found that there has been significant decline in the capacity utilization of the domestic industry during the period of investigation in comparison to the earlier years. The capacity utilization came down to 49.77% during POI where it had reached 79.13% in previous year.

28. Sales Volume:

Sales volumes of petitioner company decreased from 1062 MT in 1999-2000 to 1019 MT during POI, whereas during the previous year 2001-02, the sales had increased to 1634 MT. The other domestic producer started production only in the year 2002-03. The decline in sales volume during the POI are considered significant in comparison to the previous year.

	1999-2000	2000-2001	2001-2002	POI
Sales of petitioner	1062	1410	1634	1019
Other producer	0	0	0	345
Total sales	1062	1410	1634	1364

29. Inventory :

	1999-2000	2000-01	2001-02	POI
MT	14	95	44	19
% of sales	1.32	6.74	2.69	1.86

The inventory of finished stock of the domestic industry as a percentage of sales has marginally increased during the POI in comparison to the year 1999-2000, however, it has dropped in comparison to the previous two years.

30. Price Undercutting

The Authority found that the price undercutting due to the dumped imports has been as under :

	Indonesia-Pindo Deli	Malaysia	UAE
Average NSR	***	***	***
Landed Value	***	78768	88973
Price Undercutting	***	***	***
%age Price Undercutting	***	***	***
Price under-cutting range	20-30%	15-25%	6-15%

The authority found that the price under cutting as a result of dumped imports has been quite significant.

31. Price underselling

The Authority found the price underselling as a result of dumped imports as under:

	Pindo Deli, Indonesia	Malaysia	UAE
Non-Injurious Price (NIP)	***	***	***
Landed Value	***	78768	88973
Price Underselling	***	***	***
%age Price Underselling	***	***	***
Price under-selling range	40-50%	32-42%	25-35%

The authority found that the extent of price underselling has been very significant as the landed value of imports of subject goods of subject countries has been significantly lower than the non-injurious price of the domestic industry.

32. Factors affecting domestic prices :

The Authority found that the level of price undercutting is significant as a result of dumped imports. Further, the extent of price under selling is much more severe

as the landed value of imports is significant lower than the non-injurious price of the domestic industry. The Authority also found price suppression as a result of dumped imports as the domestic industry could not raise its selling price despite increase in cost of production during the POI. The information regarding the development of sales realization and cost of production of the domestic industry was found to be as under (indexed):

	1999-2000	2000-2001	2001-2002	2002-2003
Cost of production	*** 100	*** 95.3	*** 91.28	*** 109.36
Selling price	*** 100	*** 121.26	*** 115.22	*** 108.58

33. Magnitude of the margin of dumping :

The Authority found that the magnitude of the margin of dumping of subject goods from the subject countries has been in the range of 22.82% to 92.94%, which is considered significant.

34. Employment :

The employment level of the company has been as under :

			(Indexed)
1999-2000	2000-01	2001-02	POI
100	108.57	114.29	117.14

The authority found that there has not been any significant change in the employment level of the company. The petitioner company is a multi-product company and the numbers of employees are common for all the products of the company. This parameter is, therefore, considered to be not very relevant for injury assessment.

35. Wages :

The authority found that the payment of wages to employees was as under:

			(Indexed)
1999-2000	2000-01	2001-02	POI
100	113.73	115.69	125.49

The authority noted that there has been increase in payment of wages as a result of statutory requirement for annual increments to workers. However, as the company is a multi-product company, this parameter may not give a clear guidance regarding injury.

36. Profitability:

The domestic industry has suffered direct losses on per unit sale of subject goods as per information below :

Year	Net Sales Realization (Rs./PMT)	Cost of Production (Rs./PMT)	Profit/Loss per MT Indexed
1999-2000	***	***	(-) ***
Indexed	100	100	-100
2000-01	***	***	(-) ***
Indexed	121.26	95.30	-45.62
2001-02	***	***	(-) ***
Indexed	115.22	91.28	-45.49
2002-2003	***	***	(-) ***
Indexed	108.58	109.36	-110.85

The Authority found that the per unit losses on the sale of subject goods have increased significantly during the POI in comparison to the earlier years. Since the company is suffering losses, the return on investments is negative.

37. Actual and potential negative effect on cash flows

The authority noted that the company produces other products also. The cash flow of the company with regard to other products has been positive but the cash flow has remained adverse in respect of production and sale of subject goods. The Authority found that the domestic industry has suffered cash loss during the period of investigation in the sale of subject goods, which has caused strain on the cash flow position of the company as a whole.

The figure of cash profit in respect of subject goods has been found as under(Indexed):

Rs./Lacs			
1999-2000	2000-01	2001-02	POI
***	***	***	***
-100	-55.5	-65.61	-104.95

299-21105-9

38. Growth:

The Authority found that because of losses, it would not be feasible for the domestic industry to make any new investment. Factors such as production and sales of subject goods showed negative trends of growth during the POI.

		1999-2000	2000-01	2001-02	POI
Growth in Turnover (%)	Indexed	-	61.00	10.10	-41.21
Growth in Sales Volume (%)	Indexed	-	32.77	15.88	-37.62

39. Productivity :

The productivity has been as under :

	1999-2000	2000-01	2001-02	POI
Production MT/employee	***	***	***	***
Indexed	100	128.92	128.81	79.04

The authority found that there is a significant decline in productivity during the POI. This is largely attributed to the decline in production of the domestic industry during the POI.

40. Conclusions on injury:

The Authority noted that factors such as production, capacity utilization, sales, profitability and productivity indicate negative trends during the POI in comparison to the year 1999-2000 and the years prior to the POI. The inventory of finished goods has, however, shown declining trend. The share of the domestic industry in the demand has declined to 55.44% in the POI as against 85.37% during the year 1999-2000. The share of the dumped imports from subject countries in total demand is 21.76% during POI as against nil during previous years. This loss of market share of domestic industry can be largely attributed to the dumped imports from the subject countries.

The price effect of the dumped imports is evident from the price undercutting suffered by the domestic industry as a result of the dumped imports. There is also price suppression. The industry also has suffered price underselling as the landed value of dumped imports is significantly lower than the non-injurious price of the domestic industry. The industry has suffered cash losses in the sale of subject goods. The return on investment continues to be negative. The above parameters show that the domestic industry has suffered material injury.

41. Causal Link

Arguments have been raised that the demand of subject goods is growing and in such a situation, increase in imports is inevitable. It has also been argued that the petitioner has not increased its production capacity and the quality of their product is not good. Protection by anti dumping duties would probably grant the domestic industry a monopoly status in the Indian market.

The Authority has considered the views expressed by the petitioner and other interested parties as regards the causal link. The Authority found that the technology adopted by the domestic industry for the manufacture of Thermal Sensitive Paper is comparable with that adopted by the exporter. Based on the verification of the data of the sole co-operative exporter from Indonesia, the Authority had found that exports are at dumped prices. The Authority also noted that the domestic producer is faced with the competition from producers located in various countries. The evidence of the investigation indicates that the selling prices realized by the domestic industry are largely impacted by the prices of the imported subject goods. The Authority found that the demand of the subject goods has been increasing, though during the POI the assessed demand indicated some decline. The domestic producer is using the contemporary technology and therefore, these factors cannot be attributed as the cause of injury. The imports of subject goods from EU, Japan and China are already attracting anti dumping duty and therefore, imports from these countries cannot be the cause of injury. No other material factor that may be a cause of injury has come to the notice of the Authority. The Authority concludes that the domestic industry has suffered material injury as a result of dumped imports of subject goods from subject countries.

E. PRICE UNDERTAKING

42. In response to the Disclosure Statement, M/s Pindo Deli gave an offer of price undertaking in the event of a preliminary affirmative determination of dumping and injury as per Article 8 of Agreement. The price undertaking offer was to the price level considered by the Authority as sufficient to eliminate the injurious effect of the dumping.

43. The Authority noted that in this case the normal value in respect of M/s Pindo Deli had been determined on the basis of cost of production plus a reasonable amount of profit. As per Rule 15(6), where the Designated Authority has accepted any undertaking under sub-rule (1) it may require the exporter from whom such undertaking has been accepted to provide from time to time information relevant to the fulfillment of the undertaking and to permit verification of relevant data. As the normal value in this case was determined on the basis of cost of production plus profit and not on the basis of domestic sales, it was found impracticable by the Authority to verify the cost of production each time there

would be a change necessitating upward revision of the normal value and the agreed export price. In the circumstances of the case, the Authority found that it might be difficult to accept the price undertaking, as it will be impractical to verify the cost of production of the exporter so frequently. The Authority informed to the exporter the reasons for the non-acceptance of the offer of price undertaking and also considered the comments made by the exporter. After considering the comments, the Designated Authority held that acceptance of the proposed price undertaking was impractical in this case for the reasons stated above, in accordance with Rule 15(3).

F. INDIAN INDUSTRY'S INTEREST

44. The purpose of anti dumping duties in general is to eliminate dumping which is causing injury to the domestic industry and to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market which is in the general interest of the country.

45. The Authority recognizes that the imposition of anti dumping duties might affect the price levels of the subject goods and consequently might have some influence on relative competitiveness of these products. However, fair competition on the Indian market will not be reduced by the anti dumping measures. On the contrary, imposition of anti dumping measures would remove the unfair advantages gained by dumping practices, would prevent the decline of the domestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of subject goods. With a view to minimize the impact on the downstream industry, the Authority has considered it appropriate to recommend anti dumping duty based on the lower of the dumping and injury margins. The Authority notes that the imposition of anti dumping measures would not restrict imports from subject countries in any way, and therefore, would not affect the availability of the product to the consumers.

G. CONCLUSIONS

46. The Authority has, after considering the foregoing, come to the conclusion that:

- (i) Thermal Sensitive Paper has been exported to India from subject countries below their normal value;
- (ii) The domestic industry has suffered material injury;
- (iii) The material injury has been caused by the dumped imports from subject countries;

47. It is considered necessary to impose definitive anti-dumping duty on the imports of subject goods. Accordingly, the Authority recommends imposition of anti dumping duty on the imports of Thermal Sensitive Paper.

48. It is decided to recommend the amount of anti-dumping duty equal to the margin of dumping or less, which if levied, would remove the injury to the

domestic industry. The landed price of imports was also compared with the non-injurious price of the domestic industry, determined for the period of investigation. Accordingly, it is proposed that definitive anti-dumping duties be imposed on Thermal Sensitive Paper originating in or exported from the subject countries falling under Heading 4809.10, 4811.90 & 4816.20 of the Schedule I of Customs Tariff Act. The anti-dumping duty shall be the difference between the amount mentioned in Col. 9 in the following Table and the landed value of imports of the subject goods in US\$/MT:

S. No	Sub-Heading	Description of Goods	Specification	Country of Origin	Country of Export	Producer	Exporter	Amount	Unit of Measurement	Currency
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
1.	4809.10 4811.90 4816.20	Thermal Sensitive Paper	All types	Indonesia,	Any country	Any producer	Any exporter	1730.15	MT	US\$
2.	4809.10 4811.90 4816.20	Thermal Sensitive Paper	All types	Any country	Indonesia	Any producer	Any exporter	1730.15	MT	US\$
3.	4809.10 4811.90 4816.20	Thermal Sensitive Paper	All types	Malaysia	Any country	Any producer	Any exporter	2626.82	MT	US\$
4.	4809.10 4811.90 4816.20	Thermal Sensitive Paper	All types	Any country	Malaysia	Any producer	Any exporter	2626.82	MT	US\$
5.	4809.10 4811.90 4816.20	Thermal Sensitive Paper	All types	UAE	Any country	Any producer	Any exporter	2626.82	MT	US\$
6.	4809.10 4811.90 4816.20	Thermal Sensitive Paper	All types	Any country	UAE	Any producer	Any exporter	2626.82	MT	US\$

49. Landed value of imports for the purpose shall be the assessable value as determined under the Customs Act, 1962 and all duties of customs except duties levied under Section 3, 3A, 8B, 9 and 9A of the Customs Tariff Act, 1975.

50. An appeal against this order shall lie before the Customs, Excise and Service Tax Appellate Tribunal in accordance with the Customs Tariff Act.

CHRISTY L. FERNANDEZ, Designated Authority